चतुर्थ अध्याय

मृणाल पाण्डे के कहानी संग्रह में स्त्री-विमर्श

<u>बचुली चौकीदारिन की कढ़ी</u> (कहानी-संग्रह)

(1) **बिब्बो**

(2) **पितृदाय**

(3) **कुत्ते की मौत**

(4) **प्रतिशोध**

(5) **एक नीच ट्रेजेडी**

(6) **एक स्त्री का विदागीत**

(7) **कुनू**

(8) **प्रेमचंद: जैसा कि मैंने उन्हें देखा**

(9) **जगह मिलने प र साइड दी जायेगी उर्फ तीसरी दुनिया की ए प्रेम कथा**

(10) **परियों का नाच ऐसा !**

(11) **लक्का-सुन्नी**

(12) **दूरियाँ**

(13) **हमसफर**

(14) **चार नम्बर सुनहरी बागलेन**

(15) **एक थी हँसमुख दे**

(16) **रिक्ति**

(17) **लेडीज**

(18) **लेडीज टेलर**

(19) **बचुली चौकीदारिन की कढ़ी।**

<u>चार दिन की जवानी तेरी</u> (कहानी-संग्रह)– इसमें कुल ग्यारह कहानियाँ हैं जैसे-

1. **लड़कियाँ**
2. **एक पगलाई सस्पेंस कथा**
3. **उमेश जी**
4. **कर्कशा**
5. **हिर्दा मेयो का मंझला**
6. **मुन्नू चा की अजीब कहानी**
7. **बीज**
8. **सुपारी फुआ**
9. **अब्दुल्ला**
10. **विष्णुदत्त शर्मा के लिए एक समकालीन नीतिकथा**
11. **चार दिन की जवानी तेरी**

<u>यानी कि एक बात थी</u> (कहानी-संग्रह)- इसमें कुल 28 कहानियां हैं जैसे-

1. **कोहरा और मछलियाँ**
2. **चिमगादड़ें**

3. ढलवान
4. औडर
5. व्यक्तिगत
6. शरण्य की ओर
7. चेहरे
8. धूप-छाँह
9. प्रेत-बाधा
10. तुम और वह और वे
11. कगार पर
12. दरम्यान
13. कैंसर
14. दुर्घटना
15. आततायी
16. शब्दवेधी
17. समुद्र की सतह से दो हजार मीटर ऊपर
18. रूबी
19. कौवे
20. लकीरें
21. मीटिंग
22. नुक्कड़ तक

23. गर्मियाँ

24. खेल

25. बर्फ

26. अँधेरे से अँधेरे तक

27. दोपहर में मौत

28. यानी कि एक बात थी।

मृणाल पाण्डे की कहानियों में जीवन का यथार्थ बोध दिखाई देता है। इनकी कहानियां मानव मन की परतों को खोलती हैं। कहानियों में व्यक्त जीवन का सम्पूर्ण भाग बड़े अच्छे से दिखाई देता है। इनकी कहानियों में केवल सामाजिक चित्रण ही नहीं है बल्कि मनोवैज्ञानिक स्तर पर समाज को परखने का नया अंदाज भी है यही अंदाज मृणाल पांडे को सबसे अलग रखता है। उनका मूल्यबोध, स्त्री जीवन के नए सरोकार को व्यक्त करता है। एक ओर स्त्री जीवन की अकुलाहट, बेचैनी और छटपटाहट है, दूसरी ओर पुरूष आतंक से चित्रित नारी के प्रति मानवीय संवेदना है। स्त्री न कुछ कह पाती है, न कुछ बोल पाती है बल्कि अंदर ही अंदर कुंठित होती है। साथ ही जब यही कुंठा बदल जाती है तब वह विद्रोह की स्थिति पैदा करती हैं, वही सबके सामने आ जाती है और विरोध कर देती है। दूसरी ओर पितृसत्तात्मक व्यस्था एवं सामाजिक व्यवस्था दोनों को स्त्री जीवन के पात्र एक गंभीर समस्या के साथ व्यक्त करते हैं। उनके विचारों में सामाजिक सीख भी है, मूल्यबोध की गहराई भी है। मृणाल पांडे मूलतः समकालीन महिला साहित्यकार हैं, समकालीन जिंदगी की उठा-पटक, रहन-सहन एवं सामाजिक वातावरण का चित्रण इनकी कहानियों में सहज ही देखने को मिल जाता है। समकालीन मूल्यबोध को इतनी आसानी से कहानियों में मृणाल पांडे व्यक्त करती हैं कि वहां कुछ कहने की आवश्यकता नहीं होती, बस इशारे ही में बहुत कुछ बातें स्पष्ट हो जाती हैं। आज का स्त्री लेखन उनकी कहानियों में सहज ही दिखाई पड़ता है।

कहानियां कल्पित नहीं यथार्थ जीवन बोध से जड़ित हैं यहां तक कि स्त्री जीवन की समस्या ही कहानियों में दिखाई देती है। गांव, शहर एवं आंचलिक क्षेत्रों की समस्याओं का खाका उनकी कहानियों में बड़े सारगर्भित तौर पर दिखाई देता है। पहाड़ी अंचल की कथा को, आदिवासी जीवन की समस्याओं कों, स्त्री जीवन की समस्या को तथा मध्य वर्गीय समाज की स्त्रियों का चित्रण कहानियों में कई स्तर पर देखने को मिलता है। महानगरीय सभ्यता की जीवन शैली, दाँव पेंच में फंसी स्त्री का संसार तथा जीवन की त्रासदी इनकी कहानियों में मिल जाती है। महानगरीय जीवन की जिस जीवन शैली को राजेन्द्र यादव ने 'जहां लक्ष्मी कैद हैं' नामक कहानी में दिखाया है। उसी तरह के अंदाज इनकी कहानियों में भी मिल जाते हैं। लगभग दो दर्जन से ज्यादा मृणाल पांडे की कहानियां मिलती हैं। जिसमें आडंबर, अंधविश्वास तथा विडंबना का जिक्र मिलता ही है साथ ही जीवनबोध का नया आइना भी कहानियों में प्रदर्शित होता हैं।

इनकी कहानियां जीवन-शैली के कई मायने उपस्थिति करती हैं। छोटे बच्चों की जिंदगी या महिला समस्या का उद्‌घाटन इनकी कहानियों में जीवंत उदाहरण के साथ मिल जाता है। कहानियों में नवीन भाव बोध, जीवन के साथ-साथ राजनीतिक दांव पेंच का गहरे स्तर पर भी भंडा फोड़ हुआ है। कहानियां केवल कही ही नहीं गई हैं बल्कि मानवता के स्तर पर व्यंग्य के रूप में देखी गयी है जिसमें रूदन की कहानी भी है जिसे सुनकर एक नयापन लगता है। कहानियां सीधी-सीधी तो कहीं ही गई है साथ ही

हास्य-व्यंग्य के माध्यम से समझाने का प्रयास भी किया गया है। इनकी कहानियां जीवन रूपी माला को कई बने बंडल में लपेटती चली जाती हैं यदि उस माला के बंडल के किसी एक पक्ष को खंडित किया गया तो पूरा का पूरा मूल्यबोध ही ध्वस्त हो जाएगा। जीवन से अलगाव, कटाव, दुराव नहीं बल्कि जीवन जीने की आकांक्षा है। उस आकांक्षा में फंसी स्त्रियां स्त्री विमर्श के आज नए दहलीज पर खड़ी हैं, खासकर स्त्री विमर्श को केन्द्र मानकर इनकी लिखी गयी कहानियां जीवन के कई संदर्भ को एक जगह रखने में सक्षम हुई हैं। पितृसत्तात्मक व्यवस्था के साथ ही एक नई परंपरा के प्रति विद्रोह भी है। शिल्प विधान भी जीवन से कटता नहीं बल्कि वह कहीं न कहीं मानव समाज को जीवन के केंद्र पर ही लाकर खड़ा कर देता है जहां जीने की गुंजाइश भी है, कहने की ललक भी है। समस्या समाधान का नया अंदाज तथा विडंबना का नया-नया उध्दरण भी इनकी कहानियां पेश करती हैं।

मृणाल पांडे के कहानी संग्रह में जीवन जगत की गहराई का मापदंड अलग है। सहजता और दुरूहता तो है ही तथा जटिलता का अंकन तो एक लहजे में व्यक्त किया गया है। जीवन की अनुभूतियों को कठिनता के स्तर पर नहीं बल्कि सहजता की मनोवृत्ति के साथ व्यक्त किया गया है। मृणाल पाण्डे की कहानियां कभी-कभी खुद बखुद अपनी शीर्षक खोल देती हैं, पढ़ने वाला पाठक यही कहता है कि कहानियां समाज के खुले रीति-रिवाजों एवं मनोभावों को रेखांकित करती हैं। इतना ही नहीं सामाजिक खोखलेपन को

दिखाती हैं। कहानियां पाठक के मन में विचारों को जन्म देने लगती हैं, वहां कल्पना का स्थान नहीं रह जाता है। जहाँ जीवन का भावबोध, अनुभूतियों के गुम्फन में गुम्फित हो जाता हैं, वहां सहजता आ जाती है बनावट का कोई स्थान नहीं रहता, यही मूल्यबोध मृणाल जी की कहानियों को सबसे अलग कर पाने में समर्थ है। इसके साथ इनकी कहानियां आज के दौर में लिखी गई कहानियों को सबसे अलग कर पाने में समर्थ है। मृणाल पांडे की कहानियां आज के दौर में लिखी गई कहानियों का आधार मानकर कभी-कभी बीच में स्त्री अस्मिता के भाव व्यक्त करती हैं। मृणाल पाण्डे के अब तक कुल तीन कहानी संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं-

(1) **बचुली चौकीदारिन की कढ़ी कहानी-संग्रह** -

(1) **बिब्बो**-

आधुनिक समय मे व्यक्ति पाश्चात्य संस्कृति एवं फैशन परस्ती में जकड़ा हुआ है। अपनी संस्कृति से मोह भंग हो रहा है। व्यक्ति के जीवन की आकांक्षा एवं चाहत दिनो-दिन बढ़ रही है। वह पैसों के लालच एवं भौतिक जीवन के आनन्द के लिए सब कुछ करने को तैयार है। 'बिब्बो' कहानी में भी यही उल्लेख मिलता है। बेचारी बिब्बो जो एक नौकरानी है। फैशन की दुनिया एवं रहन-सहन की जिन्दगी को देखकर वह भी इसी चकाचौध में पागल हो गयी है। मालिक और मालकिन उसी के बल पर ऐश कर रहे है। घर के सम्पूर्ण कार्यों की जिम्मेवारी बिब्बो पर छोड़कर उसकी

मालकिन बेफिक्र है। एक तरफ नौकरों की जिन्दगी कचरा समझने वाले लोग है जो नौकरों को मनुष्य नही समझते बल्कि उन्हें मशीन समझते हैं। यदि वही कार्य उन्हें करना पड़े तो फिर वे तो यही कहेगे कि जीवन में बड़ा कार्य करना पड़ता है या जीवन ही दुःखद है। फैशन की जिस दुनियां का जिक्र मृणाल पाण्डे ने किया है वह शायद आम जिन्दगी को तबाह करने वाला मंजर है जिसमें फसकर सामान्य व्यक्ति सब कुछ बर्बाद कर देगा। फैशन के कई तरीकों को लेखिका ने कई स्तर पर देखा-परखा है। कहानी के प्रारम्भ में ही फैशन का जिक्र करते हुए मृणाल पाण्डे कहती है कि-"यह फैशन का क्षेत्र भी बड़ा रहस्यमय इलाका है।"[1]

मृणाल पाण्डे ने अपनी कहानी में बड़े घर की औरतों का भी रूचिपूर्ण चित्रण किया गया है। साथ ही साथ सामान्य घरानों की औरतों का तुलनात्मक चित्रण उनकी कहानियों में मिल जाता है। नारी विमर्श पर लिखने वाली मृणाल पाण्डे नवचेतना वादी साहित्यकार है। कहानी में बिब्बों की मालकिन केवल खाना ही नही बनवाती बिब्बो से, बल्कि वह चाहती है कि बिब्बो घर के बाहर का भी काम करे। यहां तक कि घर में आने वाले मेहमानों या मुहल्ले के लोगों की भी सेवा करे जिसमे हमारा मोहल्ले में नाम हो। वह चाहती है कि बिब्बो खाना बनाने के साथ-साथ कुछ सिलाई-कढ़ाई, हाथ-पैरों में मालिश करना व फेशियल करना, घर में पौधों की सिंचाई करना, तरह-तरह के व्यंजन बनाना तथा मार्केट जाकर घर-गृहस्थी के सभी सामान खरीद कर लाये। बिब्बों जो एक कम उम्र की लड़की थी तथा जो

नौकरानी के तौर पर लाई गयी थी परन्तु यहाँ आकर उसके ऊपर समस्त जिम्मेवारियां थोप दी गई। कहानी में एक गरीब असहाय एवं नौकरानी स्त्री का चित्रण है जिसकी गरीबी का फायदा उठाकर एक दम्पत्ति जोड़ा काम तो करवाता है साथ ही साथ मारने की धमकी भी देता है। हमारे समाज में तमाम ऐसी स्त्रियां हैं जो घरों में काम करके जीवन-गुजार रही है। उनका जीवन ऐसे ही बीत रहा है। उन पर आंतरिक जुल्म भी होते हैं, पर वे किससे कहें, कहाँ जाये? जीवन में रहने खाने के लिए तो भी कुछ चाहिए। इसी के चलते वे दूसरों का शिकार हो जाती हैं। उन पर होने वाला शोषण विश्व की हर स्त्री का शोषण है। मृणाल पाण्डे ने ऐसी स्त्रियों को अपनी कहानी का केन्द्र बिन्दु बनाया है।

आज के दौर में भौतिक साधनों को पूर्ण करने के लिए लगातार संघर्ष करते हुए भी व्यक्ति अपना पोषण करने में परेशान है और उसी के फलस्वरूप वह आत्महत्या तक करने पर उतारू हो जाता है। कभी-कभी परम्परागत संवेदनाओं में पली-बढ़ी किसी युवती को नये माहौल में समायोजन न कर पाने के कारण आत्महत्या के लिए विवश होना पड़ता है। ऐसी परिस्थितियां आधुनिक परिवेश में गहराती जा रही हैं जो इतना तनाव पैदा कर रहीं है कि आदमी समर्थ होते हुए भी असमर्थ महसूस करने लगता है। वह अपनी चेतना शक्ति को भुलाकर असहाय एवं कमजोर हो जाता है। नयी महिला कहानीकारों की दृष्टि में ऐसे संवेदनात्मक बिन्दु हर जगह देखने को मिल जाते हैं। वे संवेदनाओं की पड़ताल करती हैं तथा

जीवन को सुलझाने का प्रयास करती हैं। स्त्री जीवन की बिडम्बना भरी कहानी को कई स्थानों पर लेखिकाओं ने चित्रित किया है।

कहानी में एक ओर नौकरानी के शोषण का चित्रण है दूसरी ओर फैशन परस्ती की दुनिया में रचे-बसे अमीर घरानों के लोगों का जिक्र है। अमीर लोगों के पास पैसे हैं, वे हर समय प्रत्येक मनुष्य को पैसे से तौलते है पर दुनिया में सब-कुछ पैसा और दौलत ही नहीं है। पहले मनुष्य का अस्तित्व है फिर जीवन की तड़क-भड़क। स्त्री जीवन के शोषण का चित्रण नौकरानी के माध्यम से जिस प्रकार लेखिका ने किया है वह आज के समय में बड़े घरानों में काम करने वाली नौकरानियों की दशा का परिचायक है। नौकरों के साथ लोग कैसा सलूक करते हैं? उन्हें न खाना देते हैं तथा वेतन भी कम देते हैं फिर भी नौकर इमानदारी से काम करते हैं। नौकरानी बिब्बो अमीर घराने में काम करते-करते उसी तरह का व्यवहार सीख गई है। यहाँ तक कि खान-पान व कपड़े पहनने का स्टाइल भी बदल गया है।

स्त्री की अस्मिता एवं जीवन के प्रसंगों को लेकर कई लेखिकाओं ने उन्हे सहानुभूति के स्तर पर रखा है। आज बाजारीकरण एवं शहरीकरण की जिन्दगी ने स्त्रियों के कामकाज को ठप नही रखा किन्तु उन्हें कम पैसो एवं आवश्यकता के अनुरूप काम करने पर मजबूर कर दिया है। इस सम्बन्ध में लेखिका राजेन्द्र वाला घोष का कहना है कि- "स्त्रियों का सबसे आवश्यक उपयोगी कार्य अपनी घर-गृहस्थी की देखभाल करना है,,,,,,,,,,,,,,क्या धनवान, क्या गरीब सबके घर की स्त्रियों के लिए उचित है

कि प्रातः काल घर के सभी व्यक्तियों से पहले बिछौने पर से उठें। उस समय एक बार भगवान का नाम लेना सबको उचित है। ---- चाहे जज साहब की स्त्री हो, चाहे डिप्टी साहब की स्त्री, स्त्री मात्र का कर्तव्य है कि अपने हाथ से रसोईं बनाए।"[2]

बिब्बो (नौकरानी) सबकी सेवा करती है। यहाँ तक की पड़ोसी और रिश्तेदार भी कुछ काम के लिए उसी पर डिपेंड थे। फैशियल करना हो या हाथ-पैर दबाना हो, कोई भी दौड़ा चला आता। यानी एक तरह से कहा जाय तो स्त्री बिब्बो सबके हाथ का खिलौना हो चुकी थी। उसे जो जैसे चाहता वैसे प्रयोग करता था। बिब्बो की जिन्दगी भी कुछ ऐसी ही हो चुकी थी। बिब्बो ने भी यही सोच लिया था कि काम तो मुझे करना ही पड़ेगा पर समय के चक्र को कौन बदल सकता है? और परिवर्तन की घड़ी को कौन मोड़ सकता है? अचानक एक दिन बिब्बो के घर से एक खत आया जिसमें यह लिखा था की बिब्बो की शादी तय हो गयी है, उसे एक अच्छा लड़का मिल गया है, जो फौज में है। अब बिब्बो जाएगी, उसकी जगह उसकी बहन कूक्कू काम करने आएगी। घर के मालकिन और अन्य लोगों को यह बात नही जच रही थी। शायद उन्हे यही अंदाजा था कि जब दूसरी नौकरानी आएगी तो वह सम्पूर्ण कार्य ठीक से कर पाए या न कर पाए। हर कार्य के लिए वह परफेक्ट रहेगी या नही, उसका बर्ताव कैसा हो?

बिब्बो नौकरानी का जीवन समर्पण का था। वह कभी किसी को किसी कार्य के लिए जबाब नही देती थी, इसलिए लोग उसे नही जाने देना चाहते थे पर अब उसका रहना मुश्किल लग रहा था। बिब्बो की पीड़ा एवं उसके हाल पर किसी को तरस नही आ रहा था, सबको अपनी पड़ी थी तथा सबको उसके केवल काम की चिन्ता थी। मानसिक एवं शारीरिक शोषण से त्रस्त स्त्री बिब्बो अब इस माहौल से निकल रही थी पर आगे क्या वह इससे मुक्त रहेगी? स्त्री की मुक्ति की आकांक्षा कभी पूर्ण होगी कि नही यह भी एक बड़ा सवाल है। इस सम्बन्ध में महादेवी वर्मा का विचार है कि- "भारतीय नारी के पास ऐसा कौन सा विशिष्ट गुण नही है कि जिसके कारण वह स्वतन्त्र व्यक्तित्व की कल्पना नही कर सकती। उसके पास सारे गुण हैं, वह त्यागमयी माता, पतिब्रता पत्नी, सोहागमयी बहन और आज्ञाकारिणी पुत्री बन सकती है तो फिर अपने लिए एक स्वतन्त्र अस्तित्व की कल्पना क्यों नही कर सकती-?"[3]

एक दिन ऐसी घड़ी आयी कि बिब्बो का सामान बध गया। कार में उसका सामान और बिस्तर रख दिए गए। घर की मालकिन ने उसे आदर्श एवं नारी स्वतन्त्रता के गुण सिखाए पर बिब्बो केवल हाँ में हाँ मिलाती रही। जिस स्त्री का शोषण कई वर्षों तक हुआ हो आज उसे ही बारीकियाँ सिखायी जा रही थी। जो मालकिन एवं मालिक कई वर्ष से उसे केवल काम की मशीन समझ रहे थे, आज उसे गुण सिखा रहे थे। बिब्बो ने उन्हे उत्तर नही दिया। कहानी में यह देखने को मिलता है कि बिब्बो ने कार में बैठकर

निकलते समय सभी मुहल्ले के लोगों को हाथ हिलाया फिर मुस्कुराते हुए निकल गयी। एक तरह से बिब्बो को दासता के संसार से मुक्ति मिल गयी। वह अपनी नयी जिन्दगी शुरू करने जा रही थी। लोग बिब्बो को अब भी याद कर रहे थे पर काम के लिए नही, अब केवल हंसी-मजाक या मनोरंजन के लिए। स्त्री को खिलौना या मशीन समझने वाले लोग या समाज अब उसके स्वाभिमान पर भी सवाल खड़ा करने लगा है। जब वह उन लोगों की जिन्दगी से अलग हो गयी तब भी लोग बिब्बो की खिल्लियां उड़ा रहे थे। एक स्त्री के लिए इससे अपमान जनक क्या हो सकता है? पितृसत्तात्मक समाज सदैव से स्त्री के विषय में सवाल खड़ा करता रहा है। अस्मिता और पहचान की चिन्ता केवल स्त्री को थी। बिब्बो अस्तित्व के लिए जिन्दा थी जबकि मालकिन और अन्य लोगों की यही धारणा थी कि- काम प्यारा है, चाम प्यारा नहीं।

(2) **पितृदाय-**

पितृदाय कहानी एक ऐसे बुजुर्ग की कहानी है जो रिटायर्ड होने के बाद अपने आप को एकदम कमजोर महसूस कर रहे थे, शरीर भी अब साथ नही दे रहा था। यह व्यक्ति कोई और नही बल्कि कहानी में उमेश नामक पात्र के पिता हैं। उमेश के पिता अब कई रोगों के शिकार भी हो चुके थे। उमेश भी उनका इलाज कराते-कराते परेशान हो चुका था यहाँ तक की

अस्पताल में आते-जाते नर्सो एवं डाक्टरों के पीछे दौड़ते-दौड़ते तथा दवाइयों के दुकान में चक्कर लगाते-लगाते परेशान हो चुका था।

10 वर्ष की उम्र में उमेश के पिता को कई रोगों की बिमारी हो चुकी थी। जो पन्द्रह साल पुराने ब्लडप्रेशर, मधुमेय और फालिज से जूझ रहे थे। किसी को भी उनसे उनका हाल समाचार पूछने का समय नही था। वे विवश लाचार और मजबूर होकर अस्पताल में भटक रहे थे। दवा के लिए पैसे भी नही थे। उमेश की कोई दूर रिश्ते की बुआ काफी समय बाद हाल जानने पहुंची, जो बता रही थी की कही से शेर की चर्बी मिल जाये तो सुनते है कि अंगो में उसकी मालिश कर देने से शर्तिया लाभ होता है।

काफी इलाज के बाद जब उमेश के पिता ठीक न हुए तब मास्टर रमाकान्त जी ने एक ज्योतिषी के बारे में बताया की यदि किसी ज्योतिषी को दिखा दिया जाय तथा भृगुसंहिता बचवाया जाय तो ये ठीक हो सकते है। आधुनिक परिवेश में पल रहा उमेश इन सब बातो में बहुत कम विश्वास करता था। लेकिन कई बार कहने पर वह तैयार हो गया। जल्द ही उस ज्योतिषी का पता लगाया गया। जिसका पता रमाकान्त जी ने दिया था। ज्योतिषी जी की फीस महंगी थी और वे सम्पूर्ण समस्याओं को खत्म करने की गांरटी ले लेते थे। दुनिया में यह हकीकत भी है कि डाक्टर, पुलिस और ज्योतिषी के पास अच्छे दिनों में कौन जाता है?

इस कहानी में दो मार्मिक बिन्दु है। पहला एक बुजुर्ग भी जिन्दगी का चित्रण। दूसरा कई बिमारियों के कारण मनुष्य का भटकता जीवन। इस सब का फायदा इस संसार में रहने वाले रमाकान्त आदि तथा ज्योतिषी उठाते है। वे पैसा ऐठते हैं तथा उन्ही के खर्चे से अपनी जिन्दगी बेहतर बनाना चाहते है। सचमुच में मानव इतना स्वार्थी हो गया है की वह किसी असहाय तथा गरीब व्यक्ति कि परवाह किये बगैर अपना काम साधता है। ज्योतिषियों के वाह्य आडम्बर और मनुष्य की हकीकत का जिक्र करते हुए मृणाल पाण्डे ज्योतिषी के काईयापन का बड़ी सावधानी से कहानी में उस बिन्दु की ओर इंगित करती है जिसको पढ़ने के बाद धर्म, पूजा-पाठ और संस्कारों पर भी सवाल खड़ा होने लगता है। ज्योतिषी कहता है कि– "संसारमें लोग जो कष्ट भोगते है वह हमेशा अपने लिए नही भोगते समझे आप! अपने मित्रों एवं शत्रुओं दोनों के लिए हम भोगते है। इसी से आप जो साधना या अनुष्ठान हमारी मार्फत करायेगे वह आपकी इच्छा से मुक्त होकर आपके पिताजी को प्रभावित करेगें ही–इसमे शक नही।"[4]

संसार में बुजुर्गों की दयनीय स्थिति को कोई नही देखना चाहता। लोग उन्हें कूड़ा-करकट समझकर बस एक कोने में रख देना चाहते हैं। आधुनिक पीढ़ी तो बिल्कुल उनसे अलग ही रहना चाहती है। फैशन और पैसे ने मनुष्य से संस्कार छीन लिये। यहां तक की अब रिश्ते भी टूट रहे है। उमेश अपने पिता के इलाज से और उनकी सेवा से अब मुँह मोड़ने लगा था। वह आये दिन अपनी खीझ उन पर निकालता था। अचानक एक दिन वह पिता को

कमरे के अन्दर बन्द कर भला- बुरा कहने लगा। सेवा करने के बजाय वह कहने लगा कि– "सात समुन्दर पार से मरने को यही आना था। तुम्हें? जन्म भर मुझे नफरत से देखा फिर मेरे ही माथें मरने आये--- पहले अपनी ऐठ से–घुला-घुला कर मां को मारा, फिर लड़की की गृहस्थी चूस खाई। अब मुझे खा लो। मरते भी नहीं की पिंड छूटे हमारा।"[5]

इतना कहते-कहते अचानक पिता जी के मुँह से गुबार निकलने लगा ऐसा लगा जैसे बाजी हस रहे हो पर बांजी तो अब इन कुसंस्कारो भी गठरी से मुक्ति पाना चाहते थे। वह बोलता रहा और बाजी को देखते-देखते एक हिचकी आयी और वे संसारिक मोह से दूर हो गये।

(3) **कुत्ते की मौत**-

प्रस्तुत कहानी में एक कुत्ते की दर्दनाक स्थिति का जिक्र किया गया है। घर में खरीद कर लाया गया कुत्ता, उसका लड़खडाकर चलना, वेश-भूषा आदि का रोमांचकारी वर्णन मिलता है। मनुष्य की तरह पशु-पक्षियों की भी अपनी पहचान होती है। उनकी भी अपनी भाषा होती है। पशुओं का जीवन मनुष्यों के जीवन से बिल्कुल अलग होता है। संवेदनात्मक स्तर पर मनुष्य पशुओं से ज्यादा चेतन प्राणी है। अपनी माता से अलग होकर कुत्ते का छोटा बच्चा (पिल्ला) चिल्ला रहा था। वह अलगाव की पीड़ा को बर्दाश्त नही कर पा रहा था। मनुष्य समाज में कुत्ते पालने का जो प्रचलन है वह पशुओं के प्रति एक संवेदना ही है, पर घर में पालतू होने के बावजूद भी कुत्ता

शांत नही हो रहा था जैसा कहानी में जिक्र भी मिलता है कि- "वह सारी रात पिल्ला न खुद सोया और न ही उसने किसी को सोने दिया।"[6]

आधुनिक समाज में कुत्ते पालना एक शौक हो गया है। लोग कुत्त पालते है, उसके लिए सभी व्यवस्था करते है और न जाने कितने पैसे खर्च करते है। यदि इस दुनिया में इतने पैसे गरीब व्यक्तियों पर खर्च किए जाय तो इस संसार में शायद ही कोई गरीब होगा। कहानी में पालित कुत्ता जिसका नाम लालू था। लालू अब धीरे-धीरे बड़ा हो रहा था। पहले बच्चों ने बताया कि उसके कान खड़े होने लगे है। अल्सेशियन की तरह कुछ समय बाद मालूम हुआ कि वह चौकन्ना होने पर कानों को खड़ा करने का आभास देता था।

घर की रखवाली करने वाला कुत्ता कुछ समय बाद बिगड़ैल हो गया। उसकी हरकतों के कारण मुहल्ले के लोग रोज शिकायत लेकर आने लगे। एक दिन एक आदमी देरी तक सड़क के सामने खिड़की से ताककर बोला कि इस कुत्ते के कारण उन्हे कभी जुर्माना भी देना होगा। वे समझ ले। राह चलना साले ने मुहाल कर रखा है,,,,,,,आदि। पशु भी जब बहक जाता है तो उसे सँभालना मुश्किल होता हैं। पशु-पक्षियों का जीवन, जीवन के कई अनुभवों को भी साझा करता है तथा मानव जीवन में कुछ शोध करने का नया अंदाज भी प्रस्तुत करता है। पशु-पक्षियों की भाषा का प्रवाह मानव जीवन की संस्कृति से जुड़ा हुआ है। कहते है कि- "किसी जमाने में कोयल कुहू-कुहू बोलती थी और पपीहा पीहू-पीहू, लोग पहली रोटी गाय के लिए

निकालते थे और आखिरी कुत्ते के लिए। मुसलमान की बेटी की शादी हो तो हिन्दू कन्यादान लेकर जाते थे और हिन्दू की बेटी की शादी हो तो मुसलमान जोड़ा लेकर। अब तो कहते है कि कोयल बोलती ही नही, बोलता है और गाना, उसे हम समझे तो हमारी मर्जी है तो वह मेटिंग काल/सूचना का युग है।"[7]

कुत्ते की जात कुछ दिन बाद और ही काम करने लगा। लोगों को काटना शुरु कर दिया एवं घर के मालकिन को हाँथ में काट लिया तब घर के मालिक ने उसे अस्पताल में डाक्टर को दिखाया। डाक्टर बोला कि इस कुत्ते को खत्म करा दीजिए, अब यह सुधरने वाला नहीं है। यदि इसे रेबीज होगा तो फिर मनुष्य के लिए बड़ी समस्या बन जाएगा। मालिक द्वारा पैंतिस रुपये जमाकर डाक्टर के पास कुत्ते को छोड़ दिया गया और कुछ समय बाद पता चला कि कुत्ता मर गया। इस प्रकार अपनी पाशविक प्रवृत्ति के कारण कुत्ते की दर्दनाक मौत हुई। यदि वह जिन्दा होता तो न जाने कितने प्राणियों को अपने जहर का शिकार बनाता। 'कुत्ते की मौत' पर व्यंग्य कसते हुए बाल्कनी की एक औरत ने कहा कि- "अरे कुत्ता है तो कुत्ते की औकात में रहे। कुत्ता भी आदमी जैसा तुनक मियाज हो जाए तो हम लोग पालतू बनाकर किसे रखेगे, है कि नही।"[8]

(4) **प्रतिशोध-**

कहानी में प्रमुख पात्र मधुसूदन बाबू है जो लगभग सत्तावन साल के है तथा संगीत के साधक भी है। संगीत में इतना ज्यादा रुचि भी रखते है कि कोई भी यदि संगीत की थोड़ी सी चर्चा कर दे तो वे उसे बहुत ज्यादा ज्ञान देते थे। मधुसूदन बाबू के अन्दर स्त्रियों के प्रति प्रतिशोध की भावना थी, शायद वे इसलिए जीवन भर अविवाहित भी रहे। ऐसा नही था कि उनके अन्दर विवाह की इच्छा नही जगी, कई ऐसे दौर भी आए जहाँ वे विवाह की इच्छा भी प्रकट करते है परन्तु फिर भी अविवाहित ही रहे। स्त्रियों की चाल-ढाल, रहन-सहन तथा अन्य क्रियाएं मधुसूदन बाबू को रास नही आती थी जैसा कि कहानी के एक अंश से इसका सबूत मिल जाता है। लड़कियाँ जब एक चाट के ठेले के पास खड़ी चहक रही थी तब मधुसूदन बाबू उठकर सब्जी में कलछी चलाते हुए कहा- "अब पैसे उड़ायेगीं, इसी सब वाहियात खाने पर। अरे, दाल-रोटी का सात्विक खाना खाओ और उनकी तरह सत्तावन साल की उम्र में भी टिंच रहो, पर नही। अभी ये सब अंट-संट खा-खाकर जब तक तीस की होयेंगी तो मेदा ऐसा हो चुकेगा कि चालिस की लगेंगी, और खाओ तामसिक भोजन और लगाओ किरीम-पौडर!---ये हिन-हिन घोड़ियां संगीत सीखेंगी! हुह! नारी की झांईं परत, अंधा होत भुजंग,,,,,,,,,।"[9]

कहानीकार मृणाल पाण्डे ने मधुसूदन बाबू के माध्यम से पाश्चात्य संस्कृति पर व्यंग्य किया है। उनका मानना है कि जो सादगी और मजबूती भारतीय संस्कृति में है वो पाश्चात्य संस्कृति में नही है, पर आज का समय

ऐसा आ गया है कि लोग पाश्चात्य सभ्यता एवं संस्कृति को अपनाते जा रहे हैं, उसी का पालन कर रहे हैं। भारतीय सामान एवं खाद्य चीजों पर उनका भरोसा नही रह गया है। भारतीय लोग 'मेड इन जर्मनी` एवं 'मेड इन चाइना' की चीजों पर ज्यादा विश्वास रखते हैं। मधुसूदन बाबू ने भी बताया कि पहले हारमोनियम की कैसी बढ़िया ताबें की रीडस एवं क्या पर्दे होते थे और क्या लाजबाब टयूनिंग। पर्दे पर उंगली हुई नही कि सुर गा उठता था लेकिन अब प्लास्टिक के चमकीले पर्दे लगाकर 'शो पीस' से काम चलाया जा रहा है। अब भड़काऊ एवं रंगीली चीजें ज्यादा हैं, गुण न के बराबर है ।

मृणाल पाण्डे ने मधुसूदन बाबू के माध्यम से स्त्री जीवन की पड़ताल की है। स्त्री के दोहरे चरित्र एवं दोहरी मानसिकता की जांच करने वालों की अच्छी खबर ली है। इस संसार में सभी मनुष्य स्वतंत्र रुप से जीने, रहने, खाने के लिए स्वतंत्र हैं फिर भी न जाने क्यों स्त्रियों पर आए दिनों कई सवालों की बौछार होती रहती है? स्त्री यदि समाज से थोड़ा भी अलग ढंग से रहने, घूमने, चलने लगे तो लोग सवाल खड़ा करने लगते है। स्त्री स्वतंत्र होना चाहती है, वह अपने ऊपर किसी का अधिकार नही चाहती। वह अपने निर्णय स्वयं लेना चाहती है पर यह समाज उसे अपने विचारों एवं नीतियों में बाधकर ले चलना चाहता है।

सामाजिक विडम्बनाओं में जूझ रही स्त्री कुछ भी कार्य करने के लिए कितना स्वतंत्र है? यह सब जानते हैं। स्त्री विरोधी मानसिकता वाले मधुसूदन बाबू स्त्रियों की कमियों को हर जगह निकालते है। स्त्रियों के कृया-कलाप

पर सवाल खड़े करते हैं। स्त्री का जीवन सरल एवं सहनशील होता है। स्त्री जीवन पर बात करते हुए महादेवी वर्मा श्रृंखला की कड़ियाँ में कहती हैं कि- "नारी जाति भी समाज को अपनी शक्ति से अधिक देकर, अपनी सहन शक्ति से अधिक त्याग स्वीकार करके संज्ञाहीन हो गई है, नही तो क्या बलिष्ठ से बलिष्ठ व्यक्ति को दहला देने वाली कठोर से कठोर व्यक्ति को रुला देने वाली यंत्रणाँए वह इतने मूक भाव से सहन कर सकती।"[10]

मधुसूदन बाबू के वक्तव्यों के माध्यम से लेखिका ने स्त्रियों को कुछ बातों पर चेतावनी भी दिया है। उनका मानना है कि स्त्री को गंभीर एवं मितभाषी होना चाहिए। स्त्री से जितना पूछा जाए बस उतना ही बताए। लोक-लाज व मानव जीवन को मर्यादा में रहकर जीवन व्यतीत करना चाहिए तथा अपने अधिकारों को जानने के लिए तत्पर रहना चाहिए। उनका यह भी मानना है कि लड़कियों को सिर चढ़ाकर नही रखना चाहिए एवं उनके कर्तव्य के प्रति समय-समय पर सावधान करते रहना चाहिए। उनके पहनावे, रहन-सहन पर नजर रखनी चाहिए, छूट उतना ही देना चाहिए कि जितना जरुरी है। उनके साथ सामाजिक भेद-भाव न हो तथा उनके अन्दर यह न महसूस होकि हम लड़की है यह कार्य नहीं कर सकते। स्त्री जीवन के अस्तित्व पर बात करते हुए मन्नू भण्डारी अपनी कहानी 'ईसा के घर इन्सान' में मिस्टर एंजिला के माध्यम से कहती हैं कि- "देखो मेरे रूप को–मै अपनी जिन्दगी को, अपने इस रूप को चर्च की दीवारों के बीच नष्ट नही होने

दूंगी। मै जिंदा रहना चाहती हूँ, आदमी की तरह। मै इस चर्च में घुट-घुट कर नहीं मरूँगी–मैं भाग जाऊगीं, मैं भाग जाऊगीं-।"[11]

कहानी लेखिका ने कहानी में दमयंती नामक स्त्री का चित्रण किया है, जो दामोदर की बहन थी। दामोदर ने जब दमयंती से मधुसूदन बाबू का परिचय कराया तब वे स्त्री विरोधी मानसिकता को अपने से दूर करने लगे। सहसा ऐसा लगा कि मधुसूदन बाबू के जीवन में परिवर्तन होने लगा। उनके हृदय में घृणा की जगह प्रेम उत्पन्न होने लगा। अब उनके हृदय में भी विवाह की इच्छा जागने लगी। मन ही मन सोचने लगे कि काश ! एक मौका मुछे भी मिल जाता। परिवर्तन तो यहाँ तक देखने को मिला कि उन्होंने सालों के बाद दो नयी कमीजें सिलवायी, एक जोड़ी नयी चप्पलें भी मोला लीं। नाई से जब उन्होने कलमें ठीक से कतरने को कहा तो वह कुछ हक्का-बक्का सा देखने लगा।

लेखिका ने कहानी में गीत शैली के माध्यम से रोचकता उत्पन्न करने की कोशिश की है। गीतों में जो दर्द है, राग है, उसकी जो बुनावट है पाठक को अपने ओर अनायास ही खींच लेती है। हर कोई उसे सुनना चाहता है। लेखिका ने मधुसूदन बाबू की बेचैनी को गीतों के माध्यम से व्यक्त किया है। यह बेचैनी सामान्य नही बल्कि जीवन में दाम्पत्य प्रेम की है जिसमें सात्विक मधुसूदन बाबू भी प्रवेश करना चाहते है। निराशा से अब आशा की चिन्गारी को जलाना चाहते है। दमयंती के परिचय के बाद मधुसूदन बाबू

अपने कमरे में अक्सर हारमोनियम पर रात को ठुमरियाँ गाते रहते- 'पिया मत जइयो रे' अकेली डर लागे।

इस प्रकार यह कहानी मानवीय संवेदना, स्त्री जीवन तथा संगीत की चहल-पहल को अपने अन्दर समेटती है।

(5) **एक नीच ट्रैजेडी** -

मृणाल पाण्डे की यह कहानी स्त्री जीवन की विसंगतियों एवं दया, करुणा की कहानी कहती है। कई स्त्रियों का जिक्र करके लेखिका ने भारतीय स्त्रियों के जीवन एवं मानवीय संत्रास को व्यक्त किया है। घर-परिवार में उलझी रहने वाली स्त्री को बाहरी दुनियां से परिचित होने का कम समय मिलता है। लेखिका ने कहानी के प्रारंभ मे कालिदीं, वीना, स्वप्ना, वासंती इन चार स्त्रियों का जिक्र किया है, जो सदैव समूह में रहती थीं और अपने मन से कार्य करती थीं। किसी का इनके ऊपर कोई प्रतिबन्ध नहीं। ये ऐसी बालिकाएँ थी जिनके ऊपर दूसरे की भावनाओं का कोई असर नही होता था। कड़वी से कड़वी राजनीतिक टिप्पड़ी वे कर सकती थीं या कालेज में परीक्षा के समय खराब पेपर होने के बाद भी वे हँस-हँस कर भूखे भरे कौर निगल सकती थीं।

लेखिका ने स्त्रियों के जिस निजी जीवन को बड़ी बारीकी से टटोला है तथा उनकी मनःस्थिति को बड़ी सावधानी से व्यक्त किया है उसे रिसर्च परक ही कहा जाएगा। ऐसा कोई साहित्यकार या पत्रकार तभी कर सकता है जब वह उनके बारे में ऐसा अनुसंधान करेगा। मृणाल पाण्डे ने इन सबकी

लम्बी रेखा खीचकर स्त्री-विमर्श को नयी दिशा दी है। कहानी में लेखिका ने इन सबके माध्यम से अपने पारिवारिक जीवन को भी जोड़ा है। अपने 'क' चाचा का उदाहरण देकर मानवीय आदर्श एवं व्यवहारिकता का अच्छा परिचय दिया है। अपनी माँ, मौसी आदि को कहानी के केन्द्र में रखकर कहानी को नयी दिशा देने की कोशिश की है।

एक नीच ट्रैजडी कहानी लिखने का उद्देश्य अपनी मौसी के जीवन स्थितियों का चित्रण करना था। उनकी मालिनी मौसी जीवन के कई दुःखद स्थितियों का सामना कर चुकी थी तथा घुट-घुट कर जीवन व्यतीत कर रहीं थीं। मालिनी मौसी सदैव तीखा बोलने वाली तथा सदैव अपने भीतर एक दुःख का सागर अपने अन्दर समेटे हुए थी। उनके दुःख की कहानी स्त्री जीवन की कई परतों को खोलती है, जहां स्त्रियां एक कचरे के ढ़ेर के समान नजर आती हैं। शंकालु प्रकृति की होने के कारण मालिनी मौसी अत्यन्त सरल, सुशील, धर्मभीरु और हँसमुख माँ से कतई भिन्न थीं। उनके अन्दर जो रुक-रुक बोलने की आदत थी, उनकी झुझलाहट, विनयशीलता एक स्त्री के गुणों को वस्तुतः व्यक्त करती थी। उतने पर भी रुक-रुकबनने वाली भंगिमाओं में एक समूची स्त्री जाति का दर्द और इतिहास दिखायी देता था, जिसे देखकर या समझकर किसी के अन्दर स्त्री के प्रति दया, करुणा का भाव जग सकता था। नारी जीवन की जिस ट्रैजडी को मालिनी मौसी ने सहा और भोगा वह आज कहीं न कहीं हमारी सामाजिक विडम्बनाओं को झेल रही स्त्रियों में देखा जा सकता है।

मृणाल पाण्डे ने मालिनी मौसी के जिस हालात का चित्रण किया है, उसे पढ़कर तो यह लगता है कि स्त्री सदैव से पीड़ा में अपना जीवन गुजारा है। उसकी त्रासदी को सुनने के लिए कोई तैयार नही होता था। मृणाल पाण्डे लिखती है कि- "त्रासदी की रानी मालिनी मौसी का रहस्यमय रूप में ट्रैजिक स्त्रीत्व ही एक ऐसी शिला थी, जिसके तले उनका व्यक्तित्व कतई भिंचकर रह गया था। उनके घर जाने पर या जब-जब वे हमारे घर आतीं हम उन्हे अपनी तीखी आवाज में शिकायतें ही करते-सुनते थे। अपने स्त्रीत्व से उत्कट घृणा और आत्म दया के बीच उनकी हर बात सदा झूलती रहती। मर्दपने की गंध भरकर चाहे वह तंबाकू का धुँआं या अश्लील मजाक या उंचे ठहाके उन्हे एक उत्कट उत्तेजना से भर जाते थे। वे घंटो अपनी घृणा में पुरानी घड़ी सी टिकटिकाती रहतीं। बेटों की खर्चीली बेरुखी से लेकर, पति की छोटे शहर की स्थायी नौकरी और पुराने नौकरों की ढीठ, चतुराई तक शिकायतें उनके हर वार्तालाप की टेक होती----उनके आलिगनों से सदा दवाइयों और अकेलेपन की उत्कट गंध आती थी पर इन सबके बावजूद इस सारी त्रासदी में कुछ था जो बेहद कारुणिक और मानवीय भी था। मौसी का दुःख उस जीव का शब्दहीन दुःख था जो प्रकृति के अन्याय पर और स्थितियों के घटियापन के विरुध्द अकेलेपन और शुन्यता के छोरों पर बिना हथियार डाले जूझ रहा है, अपनी तरह से ---।"[12]

इसके अलावा इस कहानी में लेखिका ने किशवर, शालिनी मौसी, पुसी तथा निर्मला आदि स्त्रियों की जीवन गाथा को अपनी कहानी का केन्द्र बिंदु बनाया है। हमारे समाज में विधवा स्त्रियों की कई समस्याएं है। निर्मला जी इसी प्रकार की एक स्त्री थी जो बुजुर्ग रिसर्च स्कालर थी। बहुत कम उम्र में विधवा हो गई थी। उनका अंतर्मुखजना मालिनी मौसी की तरह एक चिड़चिड़े स्वभाव वाला था। शालिनी और मालिनी मौसी की स्थितियों की टकराहटें स्त्री के अस्तित्व पर सवाल खड़ा करती है। अपने स्त्रीत्व की पहचान के लिए दर-दर भटकने वाली दोनों बहनें नारी जीवन के कई रहस्यमय परदों को खोलती है जहाँ उनका कोई सहारा नही। अपने आप को अकेला समझ कर जीवन जीने वाली ये औरतें आने वाली पीढ़ी को हिम्मत, तथा ताकत देंतीं है। स्त्रीं कीं स्वयं की स्वतंत्रता होनी चाहिए जिससे वह अपनी मनोवृत्ति व्यक्त कर सके। स्त्री जीवन की पड़ताल करते हुए प्रभा खेतान कहती है कि- "मूल प्रश्न मानवीय गरिमा और सम्मान का है एवं सभी के लिए यह चिन्ता का विषय होना चाहिए कि क्या स्त्री की पहचान उसकी योनि से ही होती है।"[13]

(6) **एक स्त्री का विदागीत-**

'एक स्त्री का विदागीत' कहानी कई सामाजिक एवं नारीवादी मुद्दों का उल्लेख करती है। मृणाल पाण्डे की कहानियाँ स्त्री के करुणा के संसार को व्याख्यायित करती हैं। स्त्री की तड़पन, बेचैनी, अंतर्द्वंद्व की टकराहट

आदि को सहज ही उनकी कहानियों में देखने को मिल जाता है। कहानी में सास सावित्री और बहू सुषमा के रिश्तों को मृणाल पाण्डे ने सामाजिक संवेदना के साथ व्यक्त किया है। परिवार में सावित्री और उसका लड़का तथा बहू सुषमा, दो लड़कियां तथा एक और लड़का तथा बहू है।

कहानी जिसके लिए लिखी गई है उसका केन्द्र बिन्दु है सावित्री। सावित्री एक विधवा स्त्री है। विधवा एवं अकेलेपन के कारण वह सबके लिए पराई हो गई है। बेटा और बहु उसके सुनते नही है। अपने अन्दर ही वह जीवन का दर्द छुपाए हुए है। एक माँ से जब उसकी सन्तान सौतेला व्यवहार करने लगे तब वह स्त्री संसार में कैसे जिन्दा रहेगी? सावित्रि के अन्दर की ममता एवं करुणा अपने पुत्र के लिए दुआएँ मांगती थी मगर सन्तान उसका कुछ सुनना नही चाहती थी। अपने अन्दर की कमजोरियों एवं बेचैनी को सावित्री छुपाए हुए थी। वह अपना कष्ट बताकर अपने सन्तान को तकलीफ नहीं देना चाहती थी। बहू के व्यवहार से तंग आकर सावित्री अब केवल गुम-सुम रहती थी। जीवन के अन्तिम पड़ाव पर सासांरिक कष्टों से जूझती हुई हर झंझावात से लड़ने के लिए सावित्री तैयार थी, वह हार नहीं मानती थी। सावित्री को अपने बेटियों से भी लगाव था। सावित्री को अपने पति की जब याद आती थी तब वह याद करके रोती थी क्योकि उसका पति मर चुका था, वह विधवा थी। मृणाल पाण्डे से इस कहानी के माध्यम से एक वैधव्य स्त्री की व्यथा-कथा को अपनी कहानी का मुख्य विन्दु बनाया। हमारे समाज में जो स्त्री विधवा हो जाती है वह असहाय हो जाती है, उसका कोई

सहारा नही होता। यहाँ तक कि बेटे और बहू भी मुँह मोड़ लेते है। इतना ही नही सगे-सम्बधी भी खिल्लियाँ उड़ाते हैं पर सावित्री जीवन से हार मानने वाली स्त्री नही थी। वह अपने दर्दो को अपने अंतःमें छुपाए जी रही थी। वह उस दिन का इन्तजार कर रही थी कि मौका मिले और वह समाज में अपने बेटे और बहू की हकीकत को सामने लाए।

सावित्री बहुत शान्त स्त्री थी। वह अपने पति का कभी जबाब नही देती थी। यही कारण है कि उसने कभी अपने बच्चों पर जुल्म नही किया मगर आज उसके बच्चे उसी की दुर्दशा कर चुके थे। सावित्री विथवा तो थी ही साथ ही साथ अब वह बुर्जुग भी (वृद्ध) भी हो चुकी थी। समाज में जब व्यक्ति वृद्ध हो जाता है तब उसकी खुद की संतान उसे बोझ समझने लगती है। सावित्री भी अब इसी दशा से गुजर रही थी। जीवन में दोहरी मार झेलने वाली सावित्री जीवन के अन्तिम पड़ाव पर पहुँच चुकी थी। अब उसका आपरेशन होने वाला था। जीवन के अपने अन्त समय में वह हताश होती है अर्थात जब सावित्री को महसूस होता है कि वह अब मर जाएगी तब वह हनुमान चालीसा पढने लगती है।

अपने कष्टों को दूर करने के लिए वह अब ईश्वर का सहारा लेती है, मगर मर जाती है। उसकी बहू सुषमा उसका ध्यान रखती है परन्तु उसे बचा नही पाती है। हमारे समाज में तमाम ऐसे सावित्री जैसी सास अब भी घर-परिवार में बहुओं के लिए सामान्य नारी है। आधुनिक बहुएं अब सास को कुछ नही समझती बस केवल अपना हुक्म जमातीं है। यह हर घर, हर

परिवार की विडम्बना है। जो दशा सावित्री की है वही दशा 'शेषयात्रा' उपन्यास में अनुपा की है। अनुपा की करुण दशा पर उषा प्रियंवदा कहती है कि- "वह अधेरे में आँख फाड़े लेटी रहती है, एकदम स्तब्ध बिना हिले डुले। वह अपने दिल की धड़कन महसूस कर रही है। छाती में कसा हुआ दिल उसे अंदर से हिलाता हुआ झकझोरता हुआ अपनी ही तेज गति से धक-धक करता हुआ।"[14]

(7) **कुनू**-

यह एक कुनू नामक लड़की की बाल कथा है। बाल मनोविज्ञान की जिस बारीकी को मृणाल पाण्डे ने पकड़ा है और उसके कई संकेतो को कहानी में जिस सूक्ष्मता के साथ वर्णन किया वह सराहनीय है। बाल जीवन की कई सुखद अनुभूतियाँ सभी के हृदय में एक स्थान सा बना लेती है जो अपने बच्चों के प्रति देखने को मिल जाती हैं। कुनू एक छोटी लड़की है परन्तु उसके मन के कई ऐसे सवाल उठते हैं जो पाठक को सोचने पर मजबूर कर देते है और उसका उत्तर अंतर्द्वंद्व के रूप में सबके मन में कौधता रहता है। कुनू पहाड़ी पर रहती है। पहाड़ी के ऊपर एक किला है, उस किले में रहने वाली कुनू वहाँ आस-पास चक्कर लगाती रहती है। उसे पहाड़ों से नफरत भी है, लगाव भी है, साथ ही साथ वहाँ की संस्कृति में रची-बसी भी है। जब कोई बालक छोटा होता है तब उसके मन में कई सवाल उठते है, वह पड़े-बड़े प्रश्न पूछता है। कुनू ऐसे ही जबाब चाहती थी। उसने समुद्र के बारे में प्रश्न किया तब माँ ने तपाक से कहा कि मुँह में

खाना भरकर नही बोलते, शान्त रहा करो। अक्सर घर-परिवार में लड़कियों को बचपन से ही शान्त, सुशील बनने की शिक्षा दी जाती है, दबाया जाता है। ऐसे में वही लड़कियां आगे चलकर कुनू की तरह चिड़ चिड़ी और विद्रोही हो जाती है। समुद्र कैसा होता है? यह एक सामान्य बालिका का सहज प्रश्न है, उसके अंदर जानने की जिज्ञासा होती है। जब तक उसके प्रश्नों का उत्तर नही मिलता उसके अन्दर जिज्ञासा बढ़ती रहती है।

बच्चे जब छोटे हैं तब उनके अन्दर कई तरह के विचार आते हैं। वे अपने जीवन में तमाम तरह की कल्पना करते है। कुनू भी बहुत कल्पना करती है। वह सोचती है कि जब वह बड़ी होगी तो महारानी बनेगी। महारानी बनकर पहाड़ों पर मजबूत दीवार का निर्माण कराएगी जिससे कोई भी गाड़ी उस पहाड़ को देख न सके। वह महारानी बनेगी कि नही कुनू को पता नही है। वह महल बनाएगी कि नही कुछ नही पता पर बाल कल्पना अन्दर चलती रहती है। उसी में जीती हुई कुनू,लेखिका के अन्दर का बाल जीवन भी जगा देती है। ऐसा लगता है कि लेखिका स्वयं अपने बचपन की कहानी लिख रही है।

कुनू बड़ी हो रही थी। उसके ऊपर कई तरह के बन्धन भी लगाए जा रहे थे। घर से बाहर न जाया करो, ज्यादा मत हँसा करो, सबके सामने मत बैठा करो। कुनू अपने ऊपर लग रहे बन्धनों को नही समझ पा रही थी। वह सोचती थी कि क्या एक लड़की होने के कारण उस पर इ तने बन्धन लगाए जा रहे? जबकि उसका भाई कहीं भी घूमता रहता था, कही भी आए-

जाए कोई नही रोकता। वह समझ गयी कि इसी तरह की रोक स्त्रियों पर भी होती होगी। स्त्रियां कई वर्षों से इन्ही रुढ़िगत परम्पराओं एवं नियमों में जीती आ रही है। आखिर ऐसा क्यों? कुनू के ये प्रश्न आज हर महिलाओं के प्रश्न है। कुनू बचपन से ही स्वतन्त्रता चाहती थी पर यह स्वतंत्रता उसे आगे न मिली। महिलाएं अधिकार तो जानती है पर मिल नही रहे, अशिक्षा और बेरोजगारी उनके पिछड़ेपन का सदैव कारण रहा। अब वे आगे बढ़ रही है फिर भी वह कमी कहीं न कहीं उनके लिए रुकावट बनी है। इस संदर्भ में निरुपमा सेवती कहती है कि- "सब हम लोग कितना आगे बढ़कर पिछड़े हुए है। धर्म की, जाति की बात ने हमे जंजीरों में जकड़ लिया है और हम अपनी कैदों से बाहर आना ही नही चाहते।"[15]

(8) प्रेमचंद: जैसा कि मैने उन्हें देखा-

इस कहानी में मृणाल पाण्डे ने प्रेमचंद के नाम पर कमाने वाले लोगों पर व्यंग्य किया है। चाहे वह नेता हो, अभिनेता हो, साहित्यकार हो या फिल्मकार हो। सभी प्रेमचंद का उदाहरण प्रस्तुत कर तथा उनकी नकल करके समाज में सर्वोच्च स्थान पाना चाहते है, वे झूठा यश कमाना चाहते है। प्रेमचन्द के उपन्यासों, कहानियों के उदाहरण पढ़कर अपना भाषण देते हैं। उनकी तरह आदर्शवादी तथा यथार्थवादी बनते है। प्रेमचन्द हिंदी साहित्य के महान साहित्यकार-उपन्यासकार तथा कहानी सम्राट थे। उन्होने प्रसिध्द साहित्य लिखकर लोगों के जीवन में क्रान्तिकारी परिवर्तन किया। आज भी लोग प्रेमचंद के साहित्य को आधार बनाकर तथा उनके उदाहरण पेशकर

अपनी दुकान चला रहे हैं। लेखिका उन दुकान चलाने वाले नकल माफियाओं की पोल खोली है जो उनके कथनों को चुराकर अपने कथन बना लेते है।

कहानी लेखिका ने ऐसे छद्म करने वाले लोगों की खबर ली है जो प्रेमचंद के नाम से स्मारक, संग्रहालय तथा पुस्तकालय बनवाते है जबकि प्रेमचंद ने ऐसी इच्छा, कभी प्रकट नही की। लोगों की ऐसी मानसिकता से प्रेमचंद की आत्मा दुःखी होती होगी। प्रेमचंद जैसे सर्वोत्कृष्ट साहित्यकार के नाम पर लूट मचाने वाले लोग आज हर जगह मिल जाएगे। उनके आदर्शों को मानते नही बल्कि उनकी धज्जियाँ उड़ा रहे हैं। यहाँ कहानी लेखिका ने व्यंग्य के रुप में लिखा जो हमें यह परिचय देती है कि प्रेचन्द के आदर्श साहित्य के नाम पर लोग अपना उल्लू सीधा कर रहे हैं। कहानी में लेखिका ने एक ऐसी बात का जिक्र किया जिसको पढ़कर हकीकत सामने आ जाती है- "प्रेमचंद मानवतावादी थे या मार्क्सवादी खबर पहुचने पर भीड़ मधुमक्खी के छत्ते की तरह कई भनभनाते कोष्ठकों में बट जाती है। पुराने पर्दे उखाड़े जा रहे है, पुराने पर्दाफाश हो रहे है, प्रेमचंद आओ और पर्दा गिराओ। मेरा हृदय चीखता है।"[16]

(9) जगह मिलने पर साइड दी जायेगी उर्फ तीसरी दुनिया की एक प्रेम कथा-

यह कहानी आधुनिक समय में युवा पीढ़ी की कहानी है। ऐसे लड़के-लड़कियों की कहानी है जो कालेज में पढ़ने जाते है और वहाँ जाकर अपनी बेरोजगारी, परिस्थिति भूल जाते है। गलत लोगों के चक्कर में पड़कर उन्ही

रास्तों पर चलने लगते है। शराब और अफीम की दुनियां में मस्त हो जाते है। सिगरेट पीना तो उनका आज का फैशन हो गया है. बात-बात पर गाली देना, झगड़ना कोई सीखे तो उन आवारा लड़को से सीखे। इतना ही नही लड़कों के साथ अब कालेज की लड़कियां भी उन्ही का रूप धारण कर रही है। वे भी अपने को लड़का ही समझती है। लड़कों के साथ चलना, घूमना तथा उनके जेब से सिगरेट निकालकर पीना, मुँह से धुँआ निकालना इत्यादि आम बात हो गयी है। कहानीकार ने भारतीय समाज की विसंगतियों एवं आने वाली युवा पीढ़ी का विवरण दिया है। उच्च और मध्य संस्कृति में पल रहे ऐसे लड़के-लड़कियां भारतीय समाज को बदनाम कर रहे हैं। वे पाश्चात्य संस्कृति की आड़ में पागल होते जा रहे है। लड़कियां भी शर्म छोड़कर हाफ कपड़े पहनकर पाश्चत्य सभ्यता की वाहक बनना चाहती है। लेखिका का मानना है कि यह स्वतंत्रता आपको मिले पर ऐसा रूप अपनाकर संस्कृति को बदनाम करना अच्छा नहीं है। विपिन लड़के की कहानी बड़े सवालों से घिरी है। वह नशा भी करता है तथा अपना समय फालतू दुनियां में व्यस्त रखता है। लेखिका ने डायरी शैली में लिखित इस कहानी में आज के युवा समाज का कारुणिक चित्रण किया है जो पाश्चात्य के अँधेरे में जीना चाहते हैं। उनको अपने संस्कृति तथा समाज की चिन्ता नही है। वे आँख बन्द कर जमीन पर दौड़ना चाहते है। ऐसे लोगों की इस दुनियां में कमी नही है।

विपिन तथा वैप्सी नामक लड़के की यह कथा समाज के कई विसंगतियों को सामने रखती है। प्रेमी-प्रेमिकाओं की दास्तांन को कहने वाली यह कथा मनोरंजक भी है। कहानी में सच की तलाश मृणाल जी ने इस प्रकार किया है- "जो लोग कहते है कि सच और केवल सच ही बोलना चाहिए तो वे सब के सब न केवल क्रूर है, बल्कि मनुष्य स्वभाव से कतई नावाफिक भी, और अगर आप उन्ही की सुनकर अनुरसण करते रहे तो हो चुका।---सच इस शहर में सिर्फ ट्रकें बोलतीं हैं जो गलत बत्ती पर सड़क क्रास करते हुए साफ कहे जाती हैं कि'जगह मिलने पर ही साइड दी जाएगी"[17]

(10) **परियों का नाच ऐसा-**

यह एक सामाजिक परिवेश की कहानी है। कहानी में बंगाल की संस्कृति का पूरा चित्रण मिलता है। वहाँ की रीति-रिवाज, खान-पान ,रहन-सहन का पूरा चित्रण मिलता है। शादी-विवाह के समय बंगाल में होने वाले रस्मों, रिवाजों, स्त्रियों के गान, नाच आदि का पूरा विवरण लेखिका ने प्रस्तुत किया है। सचमुच मे ऐसा लगता है कि जैसे परियों का नाच हो रहा है। बंगाल की प्रथा बहुत पुरानी प्रथा है उस सिस्टम को लेखिका ने बड़े चाव से दिखाया है। बंगाल में आज भी लड़की की शादी कम उम्र में हो जाती है। यदि कही पति मर गया तो वह स्त्री जीवन भर विधवा रह जाती है। लेखिका ने स्त्रियों के वैधव्य जीवन का बड़ा कारुणिक चित्रण किया है।

प्रस्तुत कहानी में नायिका कंतु बुआ हैं। कंतु बुआ एक विधवा है। छोटे उम्र में विवाह होने के कारण कुछ समय बाद जब उनके पति की मृत्यु हो गयी

तब कंतु बुआ का जीवन अकेला हो गया। कंतु बुआ अपने भाई के बेटे से बड़ा लगाव था। हरिया की शादी के लिए परेशान थी। कंतु बुआ को बड़ी इच्छा थी कि वह हरिया का व्याह देख आएं। बहुत दिन से चार तोले की चैन छुपाकर रखी थी उसको लेकर देखने जाती है। यह भी बात सत्य है कि उस घर में कंतु बुआ का बड़ा सम्मान था। बिना पूछे कंतु बुआ के कोई कार्य नही होता था। समाज में पुरुष स्त्रियों को नौकरानी समझ लेता है. बात-बात पर उसे अपने मनचाहे कार्य करवाने की धमकी देता है। ऐसा भी इस कहानी में मिलता है।

कहानी में कंतु बुआ जैसी नारियों सी समस्या को दिखाया गया है। कंतु बुआ जैसी तमाम विधवाएँ आज भी समाज में दुःखों में जी रही है। उनको देखने और समझने वाला कोई नही है। कंतु बुआ बूढ़ी हो गयी थी। अपने दर्द में भी हँसती रहती थी। अपने अन्दर छुपे दर्द को किसी से कहना नही चाहती थी। उन कष्टों को सुनकर भला कौन दूर करेगा? स्त्री सदैव से सतायी जाती रही है, हर काल और परिस्थिति में उसके साथ दुहरा बर्ताव हुआ है, वह जिए तो कैसे जिए ? नारी जीवन की मनोव्यथा का हवाला देते हुए राजेन्द्र यादव लिखते है कि- "जब वह पैरों की जूती बनने से इनकार कर देती है तो समाज उसे वेश्या बनने को मजबूर कर देता है, इस तरह परिवार से फेंकी गयी नारी ही वेश्या है।"[18]

(11) **लक्का-सुन्नी-**

प्रस्तुत कहानी का नायक मनु है। मनु की बहन लीला है। लीला जब स्कूल में पढ़ती थी तब उसे एक लड़के से दोस्ती हो जाती है, वह बंगाली थी। बाद में उसी से वह विवाह कर लेती है। परन्तु विवाह का परिणाम अच्छा नही हुआ। वह बंगाली लड़का खूब नशा करने लगा। शराब, आदि के सेवन के कारण लड़का बीमार रहने लगा। एक समय ऐसा आया कि उसका धन भी बिक गया तथा परिवार में कलह भी व्याप्त हो गया। पैसे की कमी रहने के कारण परिवार आर्थिक तंगी का शिकार हो गया। वक्त बीतता रहा और परिवार की हालत दयनीय हो चुकी थी। कुछ समय बाद लीला का पति मर गया। परिवार पर दुःखों का पहाड़ टूट पड़ा। इस शोक के कारण लीला भी बीमार रहने लगी। मनु अपनी बहन को लेकर अमेरिका से वापस चला आता है। लीला की एक बेटी भी है अमृता। वह हमेशा अपने पिता को याद करती है, उन्ही की याद में अपने आप को भूलती रहती है। बीमार होने के कारण लीला भी मर जाती है, तब वह बच्ची अमृता अनाथ हो जाती है। वह बच्ची माँ-बाप के न रहने पर अत्यन्त विक्षिप्त हो जाती है। अपना पूरा समय मिट्टी के खिलौनों के बीच बिताती है।

जब कोई उसको अपने पास बुलाता है तब अमृता सोफे के पीछे छुप जाती है और कहती है कि अभी लक्का-सुन्नी आ जाएगे। लक्का सुन्नी उसके खेलने वाले साथी है जिससे वह डरती है। लेखिका ने एक ओर लीला की समस्या के माध्यम से घर-परिवार में ऐसी स्त्रियों की कहानी कही है

कि जो लड़कियां अपने माँ-बाप के बिना आज्ञा से प्रेम विवाह कर लेती हैं और बाद में दुःखों का सामना करना पड़ता है। इतना ही नही जीवन भर अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। दूसरी बात बालिका अमृता की मानसिक स्थिति का वर्णन है। मृणाल पाण्डे ने बाल मनोविज्ञान को भी अपनी कहानी में व्यक्त किया है। बच्चों की दशा, कल्पना तथा मानसिक समझ को बड़ी बेबाकी से व्यक्त किया है। बाल जीवन की जिस दशा को लेखिका ने पक्तियों में व्यक्त किया वह अत्यन्त भावुक करने वाला है- "अमृता लक्का से कह रही है। हमारे सामने बतखें तैर रही हैं। ऊभ-चूभ होती हैं बतखें। एक बतख सिहरकर उसके कंधे को झटकारती है। सुन्नी को बतखों से डर लगता है।"[19]

(12) **दूरियाँ**-

'दूरियाँ' कहानी में कहानीकार मृणाल पाण्डे ने लड़कियों एवं उनके माता-पिता की दूरी को व्यक्त किया है। किस तरह विवाह हो जाने के बाद लड़कियों एवं माँ-बाप के बीच दूरियाँ बढ़ जाती है। यह दूरियां सन्तान को मां-बाप से अलग होने पर कष्ट देती है। कोई भी परिवार या मां-बाप बच्चों को दूर नही होने देना चाहते। हमारे समाज में लड़कियों की जब शादी हो जाती है तब वे अपने परिवार से बहुत दूर चली जाती हैं जिससे सबको कष्ट होता है। कहानी की नायिका की जब शादी हो जाती है तब वह अपने पति के साथ विदेश चली जाती है अर्थात अपने माता-पिता से दूर हो जाती

है लेकिन कुछ समय बाद अपने परिवार के पास जब समय बिताने आती है तो घर-परिवार की दयनीय दशा देखती है।

उसकी माँ कैंसर की रोगी है। वह जानती है कि कैंसर का रोगी ज्यादा दिन जीवित नही रहता और न ही दवा काम करती है। नायिका का पिता फोन पर ज्यादा समय तक व्यस्त रहता है. इसलिए अपने पुत्री की ओर ज्यादा ध्यान नही देता है। इन सब बातों का कष्ट नायिका को है। कहानी में नायिका का पिता, उसका पति तथा तिरलोक तीन पुरुष पात्र है तथा दो स्त्री पात्र है। तिरलोक भी सबकी सेवा करता है। हर वक्त सबके लिए तैयार रहता है। किसी की आज्ञा का उल्लंघन नही करता है। हमारे समाज में नौकरों को घृणा की दृष्टि से ही देखा जाता है भले ही वे घर का सम्पूर्ण कार्य करते हैं। मृणाल पाण्डे ने नौकर तिरलोक की भी दीन दशा का जिक्र किया है। वहीं दूसरी ओर स्त्री जीवन तथा पारिवारिक समस्या को भी दिखाया है। नायिका की माँ की द्वन्द्व भरी स्थिति का जिक्र कहानीकार ने इस प्रकार किया है, वे अक्सर कहती है- "कागजात देखना आना चाहिए क्या पता, कब, किसे अकेले ही सब---माँ के पास अब एक बड़ा सा रजिस्टर है जिसमें वे तारीखवार पैसे-पैसे का हिसाब टाँकती रहती हैं।"[20]

(13) **हम सफर**-

हमसफर कहानी में नायिका निर्मला की समस्या है। निर्मला एक विधवा स्त्री है क्योंकि उसका पति बहुत शराब पीता था। शराबी होने के कारण

उसके पास धन भी नही था। एक वक्त ऐसा आया कि वह मर गया। निर्मला वैधव्य जीवन व्यतीत करने लगी वहीं उसका लड़का मुन्ना अनाथ हो गया। ट्रेन में सफर करते समय जब कही से अचानक शराब की गंध आती है तब निर्मला और मुन्ना उलटियाँ करने लगते है। विधवा निर्मला को अपने पति की याद आ जाती है। वह सोचती है कि मेरा पति इसी तरह शराब पीता था, अब वह मर गया। हमारे समाज में इस तरह की कई समस्याएं देखने को मिल जाती हैं। अक्सर लोग शराब और नशे के चक्कर में अपना पूरा जीवन बरबाद कर देते है। यहाँ तक कि अपना जीवन भी गवाँ देते है। 19वीं सदी के बाद की कहानियों में कुंठा, हताशा, निराशा, नशा की प्रवृत्ति, वैधव्य जीवन की समस्या अक्सर मिलती है।

वैज्ञानिकता की ओर बढ़ रहा देश और समाज कुछ दुष्प्रवृतियों का भी शिकार हो रहा है जिस पर अंकुश लगना जरुरी है। मृणाल पाण्डे ने बालक मुन्ना और उसकी माँ की दयनीय दशा का चित्र खींचा है। विधवा निर्मला की जेठानी भी समय-समय पर व्यंग्य कसती है। कहते हैं कि संसार में जब समय खराब होता है उस समय हर कोई मौके का फायदा उठाता है। निर्मला के पति के बाद उसकी जेठानी भी उसे परेशान करती है। मृणाल पाण्डे ने कहानी में जिस तस्वीर को रिसर्चपरक दृष्टि से खीचा है वह इस प्रकार है- "कुछ खाओगे मुन्ना भूख लगी है? उसने मृदु स्वर में बच्चे से पूछा। उहुँक, मुन्ना ने सिर हिला दिया। वह खाता बहुत कम है। खाये भी तो कैसे? पराये टुकड़ों पर पलते हुए अपने बच्चे से और खाने की मनुहार की जा

सकती है क्या? श्वसुर रात को पूछते हैं, तो जिठानी उससे भी पहले बोल पड़ती है कि लीवर पहले ही नाजुक है, बाप की तरह, दूध पचेगा क्या?"[21]

(14) **चार नम्बर सुनहरी बागलेन-**

चार नम्बर सुनहरी बागलेन में रती नामक स्त्री की स्थिति का वर्णन है। रती नामक स्त्री अपने शान-शौकत में ही मस्त रहती है। यहाँ तक की अपनी गरिमा के आगे दूसरे का महत्व नही समझती। उसको अपने पैसे, नौकर तथा अपने यश का घमण्ड है। प्रारम्भ में ही लेखिका कहती है कि- "रती के बारे में हम सिर्फ इतना जानते है कि वह बेहद जहीन थी और बहुत कम हँसती थी और बड़ी झिझक और शिष्टता से जैसे अपनी जहनी काबिलियत की शर्म के नीचे पिसी जा रही हो।"[22]

रती जब बीमार हो जाती है तो वह प्रार्थना पत्र स्वयं देने नही आती है बल्कि अपने ड्राइवर से भेजती है। कालेज का बाबू पत्र पकड़ लेता है कुछ भी नही कहता। हमारे समाज में तमाम ऐसे लोग मिल जाते है जो कालेज या सरकारी संस्थाओं को अपनी जागीर समझते हैं। उसमे कार्य कर रहे कर्मचारियों को अपना गुलाम समझते है। रती की धाक एवं ऐठन को लेखिका ने पूरी ताजगी एवं व्यंग्य के साथ व्यक्त किया है। कहानी में एक अन्य नायिका है जिसका नोट्स लेकर रती घर, चली जाती है और कई दिन तक वापस नही आती। परीक्षा का समय है जब वह अपने नोट्स लेने जाती है तो पता चलता है कि रती खेलने गयी है, वह नोट्स लेकर वापस चली आती है। समाज में कुछ स्त्रियां ऐसी हो जाती है जिनके कार्य, व्यवहार

व्यक्ति को सोचने पर मजबूर करते है। रती तथा नोट्स देने वाली लड़की दोने चार नम्बर सुनहरी बागलेन में रहते है जैसा इस कहानी में मिलता है। यही कारण है कि लेखिका ने कहानी का नामकरण इसके अनुसार रखा। कहानी में यह मिलता है कि-"जबड़ा भींचकर धूप में आखें चुधियाते हुए मैने स्कूटर वाले को पता बताया चार नंबर सुनहरी बाग लेन। घर ढूढ़ने में कोई दिक्कत नहीं हुई। इस लम्बी धूप-छाही लेन में कुल छः विशाल बगलें थे जिनके लाज भी शहर की कई नई बनी बस्तियों के सार्वजनिक पार्को से कोई चौगुने साइज के होगें। बाहर लटकती तख़्तियों पर सारे नाम वे थे, जिन्हे हम अर्सो से पौने दस बजे की दूर दर्शनी खबरों में विराट अन्तर्राष्ट्रीय मसौदों पर अपनी राह बनाते हुए देखा करते थे।"[23]

(15) **एक थी हँसमुख दे-**

मृणाल पाण्डे ने इस कहानी के माध्यम से स्त्री जीवन की स्थिति तथा उऩके साथ हो रहे भेद-भाव का चित्रण किया है। कहानीकार ने सुनी-सुनाई कथा के माध्यम से नारी-विमर्श की चर्चा की है। एक जंगल था, उस जंगल के बीच में एक वनराक्षस का महल था। ऊचाँ सतरखण्डा महल, कोठे पर कोठे वाला, ऊचे दरवाजे वाला। सात परियाँ उसकी सेवा में लगी रहती थी। किसी की हिम्मत न थी कि उसके खिलाफ कोई काम कर सकें। राजकुमारी हँसमुख दे,,,यह पाटण की राजकुमारी थी। सदैव हँसती रहती थी, प्रसन्नचित्त वाली राजकुमारी हँसमुख दे सबको आनन्दित रखती थी। अचानक एक दिन सात परियाँ उसके घर आयी और उसे वनराक्षस के यहाँ

ले गयी पर वहाँ भी राजकुमारी ने राक्षस की सभी आज्ञा मानने से मना कर दिया। राजकुमारी की कथा के माध्यम से कहानी लेखिका ने वनराक्षस के महल का जो चित्रण किया वह इस प्रकार है- "सात जोड़ी हाँथों ने सात सांकले चढ़ायी, सात ताल लगाये, सात सिटकिनियाँ सटकायी। तब चारों ओर से घेर कर वे सातों परियाँ उसे भीतर ले चली-कमरे के भीतर कमरा, उसके भीतर कमरा, उसके भीतर भी कमरा के भीतर भी सात खिड़कियों वाला एक बड़ा सा लाल कमरा था जहाँ पहुँचकर वे रुक गयी।"[24]

लेखिका ने इस बात का भी जिक्र किया है कि राजकुमारी के महल में गुरु का बड़ा सम्मान था पर वे गुरु स्त्रियों से दूर रहा करते थे। स्त्रियों की परछाईं तक नहीं पड़ने की जिद रखते थे। इतना ही नही गुरु जी दुर्वासा की तरह क्रोधी भी थे। गुस्सा हो जाने पर शाप भी दे देते थे। यहाँ तक कि बहस करने पर राजा ने गुरू की आज्ञा से अपनी ही बेटी को महल से निकाल दिया था। मृणाल पाण्डे ने गुरूजी के माध्यम से यह दिखाया कि पुरुष समाज स्त्रियों का कितना विरोधी था। पितृसत्तात्मक समाज स्त्री की हर नीति को खारिज कर देता था। लेखिका ने यह जिक्र किया कि- "उसके बाप के बाल-ब्रह्मचारी गुरू थे, बड़े दुर्वासा। औरतों की परछाई भर पड़ने पर अंगास्नान करने वाले। एक बार मुँह जली हँसमुख ने हँसते-हँसते पूछ ही तो लिया-गुरू जी, आप अपनी माँ के पेट से निकलकर भी क्या गंगा स्नान करने ही भागे थे? दूध क्या आप बैल का पीते है? धरती भी तो स्त्री जाति है तब आप उसके सीने पर उपजा अन्न कैसे ग्रहण करते हैं? गुरूजी कमंडल

दण्ड उठाकर बोले-इस महल में या तो मेरा ही निवास होगा या इस वाचाल कन्या का।"[25]

वनराक्षस ने राजकुमारी को कई तरह भी यातनाएँ दी पर पाटण की राजकुमारी ने अपने अस्तित्व को कम न होने दिया। अपनी अस्मिता को बचाए रखा। वनराक्षस राजकुमारी को सिर में लोहे की कील ठोक देता है तथा कोयल बनाकर पिज़रे में बन्द कर देता है फिर भी राजकुमारी बोलती रहती थी। अन्त में उसे खा गया तब भी वह उसके पेट में बोलती रही। स्त्री सदैव से अपने अस्तित्व की लड़ाई लड़ती रही, वह पितृसत्ता का विरोध करती रही, उसी प्रकार राजकुमारी वनराक्षस का विरोध करती रही। यह कहानी स्त्रीत्व बोध की प्रेरणा देती है। राजकुमारी में आत्मसमर्पण की भावना थी। आत्मसमर्पण और पुरुष की तानाशाही माहौल से स्त्री को बाहर लाने का कार्य स्त्री-विमर्श ही करता है। नारी-विमर्श अपने अधिकार, अपनी चिंता, अपनी पहचान बताने, माँगने के विचारों का चिंतन है। यह सदियों से स्थापित पुरुष मानसिकता का खण्डन करता है। भावुकता के आवेश में बहने वाली स्त्री अब सचेत होने लगी है। स्त्रियाँ जो सदियों से सहती आ रही हैं, सब कुछ मानती आ रही थी स्त्री-विमर्श ने उस खामोशी को तोड़ा है। इसी अस्तित्व की पहचान करते हुए कृष्णा सोबती कहती हैं कि- "स्त्री विमर्श और स्त्रीत्ववादी परिप्रेक्ष्य के अभाव में न तो स्त्री की स्थिति और भूमिका पर लिखा जा सकता है और न पितृसत्तात्मक समाज के

अन्तर्विरोधों को पहचाना जा सकता है। आज तक का स्त्री लेखन पुल्लिगीं विमर्श के चौकठों में ही स्त्री संसार को देखता, लिखता आया है।"[26]

(16) रिक्ति-

रिक्त का अर्थ खाली होता है। इस कहानी में दो ही मुख्य स्त्री पात्र है, सुलभा और उसकी माँ। इसके अलावा उसका भाई है। सुलभा के पिता की मृत्यु हो चुकी है इसलिए उसकी माँ हमेशा निराश रहती है। उसको कुछ भी अच्छा नही लगता। हमेशा खाली घर में उसकी बूढ़ी माँ निराश, हताश पड़ी रहती है। घर में ऐसा कुछ भी नही है कि वह अपना समय बिताए। अपने पति की मृत्यु के बाद समय बिताना उसको मुश्किल लग रहा तथा उसका हाल जानने वाला कोई अपना नही रह गया था। मृणाल पाण्डे ने स्त्री के दर्द को उकेरा है। कुछ समय बाद घर में टेलीविजन आता है तब वह पूरा समय उसी में बिताती है और अपने पति को उसी में देखती है। सुलभा कहती है कि माँ कहती है कि- "घर बैठे ही मैं जरुरत से ज्यादा सोच लेती हूँ, तुम लोगों की दुआ से-टेलीविजन से चेहरा क्षण भर को परे कर माँ मुस्कराती है, तो क्षण भरको, सिर्फ क्षण भर के हजारवें हिस्से में, उसका बीता हुआ चेहरा उसके ढके नक्शों पर चस्पा हो जाता है।"[27]

मृणाल पाण्डे ने सुलभा की माँ के माध्यम से नारी जीवन की जिस जिम्मेदारी एवं साहस को कहानी में व्यक्त किया है वह सरायनीय है। एक स्त्री जब उसका पति मर जाता है वह संसार में अकेली हो जाती है तब वह

स्वयं अपने सहारे जीने के लिए तत्पर हो जाती है। मृणाल पाण्डे की रिक्ति कहानी लिखने का उद्देश्य यह दिखाना था कि सुलभा के पिता मर गए है इसलिए सुलभा और उसकी माँ का जीवन रिक्त हो गया है। खाली घर, खाली संसार में अब रहने का मन नही करता। कहानीकार मृणाल पाण्डे ने सुलभा की जिदगीं में रिक्त पिता के स्थान को उभारने का यत्न किया है। सुलभा अपने जीवन में पिता की कमी को महसूस कर रही है। उसके पिता नाराजगी से देख रहे थे। सुलभा अपने पिता की इच्छाएं स्वप्न में देखती है।

मृणाल पाण्डे ने सुलभा और उसकी माँ की विसंगतियों को कहानी के माध्यम से व्य1-क्त किया है। फिर भी सुलभा और उसकी माँ एक दूसरे के सहारे जीवन जी रही है। स्त्री का जीवन हमेशा से विरोधों का जीवन रहा है अतः यह कहा जाय कि-"आज नारी को किसी भी सूरत में अपनी बनाई नैतिकता पसंद है। इसलिए आज की नारी उन सारे सम्बन्धों का विरोध करती है जिसके द्वारा उसका शोषण होता है। आज की नारी अपनी प्रतिष्ठा को, अपने व्यक्तित्व को सर्वाधिक महत्व देती है फिर भी किसी बंधन में बधना पसन्द करती है। सम्बन्धों के प्रति वह स्वीकार का भाव दिखाती है।"[28]

(17) लेडीज-

लेडीज कहानी में दो ही मुख्य पात्र है। पहला सुनील, दूसरी उसकी माँ। सुनील की माँ बहुत शिक्षित, साधारण एवं धर्मपरायण स्त्री थी। वह दूसरों की मदद करती थी, गरीबों की सेवा करती थी। दंगों में मारे गए लोगों के

बच्चों की, उनकी स्त्रियों की सेवा करती थी। हर मंगलवार को वह उपवास रखती थी, सुबह-शाम हनुमान मंदिर जाती थी फिर वहाँ से लौटकर नौ से बारह दंगा पीड़ित बस्तियों में निःशुल्क धमार्थ चिकित्सालय में अपने ग्रुप की लेडीज के साथ पर्चियां बनाकर और मुफ्त दवा की गोलियां गिन-गिन कर लिफाफों में डालती हुई दूसरों की सेवा करती थी। मां अपने साथ की स्त्रियों को लेडीज कहती थीं। सुनील को यह सब कार्य बहुत कम पसन्द आता था। वह अपनी माँ को सदैव समझाता था कि वह ये सब कार्य ज्यादा न करे। यही कारण था कि सुनील अपनी मां से कभी-कभी बहुत चिढ़ता था इसलिए सुनील की मां कभी-कभी कहती थी कि- "कैसा जमाना हो गया है---हर जगह खून-खराबा लड़ाई-फसाद, गुस्सा नफरत। पहले भाईचारा था, हिन्दू-मुसलमान, सिख कभी ऐसा सोचा ही नही हम लोगों ने।"[29]

स्त्री सदैव से दया, ममता की मूर्ति रही है। सुनील की मां भी एक ममतामयी स्त्री थी। लोगों की सेवा करना उसको अच्छा लगता था। वह नही चाहती थी कि इस संसार में कोई प्राणी दुःखी रहे इसलिए वह बस्तियों मे जाकर गरीब बच्चों की सेवा करती थी तथा महिलाओं की सहायता करती थी। सुनील अपनी मां के कृया-कलापों से बहुत खिन्न रहता है। एक उसकी मां जो सदैव सुनील को समझाती रहती थी। माँ का मातृत्व सदा बच्चों की भलाई में ही बीतता है इसीलिए वह अपनी सन्तान को स्नेह करती है, उसे कभी भी खोना नही चाहती। माँ की गरिमा एवं मातृत्व पर बात करते हुए महादेवी वर्मा-कहती है कि- "हमारे यहाँ सभी माताएं है, परन्तु मातृत्व की

गरिमा से उन्नत मस्तक माता को खोज लेना सहज नही, असंख्य पत्नियाँ है परन्तु जीवन की प्रत्येक दिशा में साथ देने वाली अपने जीवन संगी के हृदय के रहस्यमयी कोने से परिचित सौभाग्य-गर्विता, सहधर्म चारिणियों की संख्या उंगलियों पर गिनने योग्य है।"[30]

(18) लेडीज टेलर-

यह कहानी एक लेडीज टेलर की कहानी है। उसके हाव-भाव तथा उसके अर्थ व्यापार का पूर्णतः चित्रण है। लेडीज टेलर का लड़का कुचलकर मर गया था इसलिए शायद वह ज्यादा हताश था। वह अक्सर अपने आप से बात करता रहता था। वह बिल्कुल पागल हो गया था। मृणाल पाण्डे ने इस कहानी में एक पिता के दर्द को भी व्यक्त किया है। एक पिता का पुत्र जब मर जाता है या पिता अपना पुत्र खो देता है तो संसार में उसके पास इससे बड़ा कोई दुख नही होता। कहानी में प्रारम्भ से ही मिलता है कि- "लेडीज टेलर जो अपनी बगल की दुकान से यहाँ आकर चाय पीने बैठता था। टेलर केगले में फीता डाक्टरी आले की तरह झूलता रहता और मोतियाविंदी चश्में के पीछे उसकी आँखे उबले अण्डे सी भावहीन लगती थी। गये बरसों डबल रोटी लाने गया उसका बेटा विन्नी बस से कुचलकर के मर गया था तब से अक्सर वह अपने आप से बोलता रहता था।"[31]

कहानीकार मृणाल पाण्डे ने इस कहानी में एक स्त्री मास्टरनी के दर्द भरी जिंदगी का भी चित्रण किया है। वह मास्टरनी कभी बच्चों को पढ़ाती थी, लेकिन कुछ समय बाद लोग उसके चरित्र पर सवाल उठाने लगे। हमारे

समाज में स्त्री कितनी भी अच्छी हो लोग उस पर उंगली उठाते ही है, उसकी कमियाँ ढूढ़ते है फिर उसे बदनाम करते है, यही हाल मास्टरनी का हुआ। मास्टरनी से पहले छेड़छाड़ हुई फिर लोगों की कहा कही शुरु हुई यहाँ तक की वह लोगों के चर्चा के केन्द्र में रही। कुछ वक्त बाद वह पागल सी हो गयी। एक अच्छी खासी स्त्री जो बच्चों को शिक्षा दे रही थी वही आज पागल बन गयी। मृणाल पाण्डे ने इसका कारण हिस्टीरिया रोग दिखाया है। हिस्टीरिया एक ऐसा रोग है जो स्त्रियों को युवावस्था में हो जाता है। इतना तक कहा जाता है कि यदि किसी स्त्री की शादी बहुत दिन तक नही हो ती तो उसे हिस्टीरिया रोग हो जाता है। मृणाल पाण्डे कहती हैं कि- "इन्ही दिनों उसे हिस्टीरिया का पहला दौरा पड़ा था, स्कूल की प्रार्थना के दौरान- 'वह शक्ति हमें दो दया निधे'- गाते जब अचानक उसके दाँत भिच गये और कुछ कुल-जलूल चिल्ला कर धड़ाम से मैदान पर औंधी गिरके बेहोश हो गयी थी।"[32]

(19) बचुली चौकीदारिन की कढ़ी-

यह कहानी एक बचुली बूबू या बचुली आमा की है जो अत्यन्त वृध्द भी है। उसका लड़का सुरिया है। सुरिया के माता-पिता पहले ही मर चुके है इसलिए सुरिया का पालन-पोषण बचुली आमा ही करती थी। बचुली आमा इतना बूढ़ी हो चुकी थी कि अब उन्हे सही से आखं भी दिखाई नही देता था। बचुली गरीब भी थी, वह बाजार में गुदड़ी-कथरी बेचती थी। उन्हीसे पैसे मिलते थे उन्ही पैसों से उसका और सुरिया का खर्च चलता था। सुरिया का

बहुत दिन से कढ़ी खाने का मन था मगर उसके आमा के पास कुछ भी खाने को नही था इसलिए वे परेशान थे। मृणाल पाण्डे ने बचुली के जीवन की कथा को ही नही कहा बल्कि वृध्दावस्था में एक बूढ़ी औरत की दशा को व्यक्त किया है। बुढ़ापे मे भी स्त्री घर-परिवार का सहारा होती है। वृध्दवस्था विमर्श की दृष्टि से भी यह कहानी जीवन के कई संकेत व्यक्त करती है।

सुरिया के मां-बाप के गुजर जाने के बाद की जिम्मेदारी बचुली आमा पर आयी थी। वह बुढापे में अत्यंत दुःखी थी। मृणाल पाण्डे कहती हैं कि "अरे, ऐसे करम न फूटे होते तो इस बारे बरस के बच्चे के सिर पर महतारी-बाप की छाँही नही होती ? ऐसे दूसरों के बच्चों की धोवन-उतरन पर, दूसरों के फटे झोले से सड़े अनाज पर पलता ये बच्चा?"[33]

सुरिया को बहुत दिन से कढ़ी खाने की मनसा थी मगर उसके पास कुछ नही था। वह किस तरह हरदन्त जैसे कजूंस व्यक्ति से धनिया, मिर्चा आदि प्राप्त करती है फिर कढ़ी बनाती है और अपनी तथा सुरिया के कढ़ी खाने की इच्छा पूरी करती है। सुरिया की किडनी भी खराब हो चुकी है वह अक्सर बीमार रहता है, मगर वह जाँच पड़ताल कहाँ से कराये, उसके पास इतना पैसा नही है। हमारे समाज में तमाम ऐसे लोग जीवन व्यतीत कर रहे हैं जिनके पास रहने को घर नही, खाने को कुछ नही है। मृणाल पाण्डे बचुली आमा के कथा के माध्यम से एक गरीब स्त्री के जीवन की दशा को रेखांकित किया है। अपने अन्दर जीवन के सारे दर्द छुपा रखी है, जिसे कोई

सुनना नही चाहता है। स्त्री जीवन के कई ऐसे मुद्दे मृणाल जी की कहानियों मे दिखाई देते है।

इसके अलावा इस कहानी में खुल्बे मास्टर का चित्रण है जो इमानदार भी है तथा बचुली की मदद भी करता है। बचुली अन्त में कढ़ी भी खाती है तथा सुरिया को खिलाती है। हमारे समाज में बचुली जैसी स्त्रियां अपने परिवार को बचाए हुए हैं। स्त्री-विमर्श पर लिखने वाले सभी साहित्यकारों ने ऐसा चित्रण किया है। बचुली की दशा का जो चित्रण है ऐसा ही चित्रण करते हुए चित्रा मुदगल 'एक जमीन अपनी' में कहती हैं कि-"पुरुष से स्वतंत्र होना है तो यह सिंदूर पोछना होगा, बिछुए त्यागने होगे। दासीत्व के प्रतीक चिन्ह,,,,,,,मैं पत्नी नही सहचरी बनना चाहती हूं।"[34]

(2) चार दिन की जवानी तेरी (कहानी-संग्रह)-

मृणाल पाण्डे के इस कहानी संकलन में कई कहानियाँ है। यह कहानियाँ स्त्री जीवन का खाका प्रस्तुत करती हैं। स्त्रियों का समाज में क्या स्थान है तथा वे किस क्षेत्र तक अपने कार्यों को आसानी से कर लेती है? हमारे देश में स्त्रियाँ शिक्षा, स्वास्थ्य, खेल, धर्म तथा राजनीति में आगे बढ़ रही है साथ ही साथ साहित्य, विज्ञान के क्षेत्र में अपना योगदान दे रही है। लेखिका ने इन सब कहानियों में स्त्री के अस्तित्व को सारगर्भित रुप से व्यक्त किया है। मृणाल पाण्डे की कहानियों के बारे में अरुण प्रकाश ने लिखा है कि- "कथा रस से भरपूर इन कहानियों में वातावरण की भव्यता के साथ-साथ चरित्र-चित्रण की विरल कुशलता भी लक्षित होती है। भाषा में

लचीलापन के साथ कविता सी खूशबू भी है। देशज मिट्टी से फूटी आधुनिकता प्रयोग के लिए परायों का मुँह नही जोड़ती बल्कि स्वयं नया रुप रचती हैं- अरुण प्रकाश।"[35]

(1) लड़कियाँ-

लड़कियाँ मृणाल पाण्डे की बहुत रोचक कहानी हैं। इसमें लेखिका ने परिवार में लड़कियों के महत्व को बताया है। एक माँ है जिसको कई बार लडकियां ही पैदा होती है। इस बार तुलसा दाई ने भी बताया है कि लड़का होगा। हमारे समाज में लड़कियां पैदा होने पर कम खुशी तथा लड़के के पैदा होने पर अधिक खुशी मनाई जाती है। बाजे बजते हैं तथा खूब खान-पान होता है वहीं लड़की हो गयी तो सबका मुंह बन जाता है, ऐसा लगता है कि जैसे कोई विपत्ति का पहाड़ टूट पड़ा हों। पितृसत्तात्मक समाज में पहले से ऐसी ही रीति चली आ रही है। लड़की को कम तथा लड़के को ज्यादा महत्व दिया जा रहा है जो कि आधुनिक परिप्रेक्ष्य में ठीक नही है। अब लड़के लड़कियां समान है दोनो को बराबरी का हक माना गया है। परिवार में लड़कियों को कम शिक्षा, कम ध्यान तथा ऐसे-तैसे पालन पोषण किया जाता है जबकि लड़कों का खूब ख्याल रखा जाता है। वही लड़कियाँ जब बड़ी होती है तब भी उनके साथ अच्छा बर्ताव नही होता है। पूजा-पाठ के समय तथा नवरात्र के अवसर इन्ही लड़कियों को कन्या मानकर या देवी का रुप समझकर पूजा की जाती है, उन्ही-लड़कियों पर बाद में जुल्म और अत्याचार भी होता है। स्वार्थीपन से भरा हमारा समाज स्त्री से हर लाभ

उठाना चाहता है और उसी का बाद में शोषण भी करता है। लड़कियों की संवेदना को महसूस कर लेखिका ने अपनी खीझ को इस प्रकार व्यक्त किया है- "जब तुम लोग लड़कियों को प्यार ही नही करते तो झूठ-मूठ के उनकी पूजा क्यों करते हो?---गुस्से में मेरे मन में आता है कि आरती का जलता कपूर निगलकर अपने इस दगाबाज गले को दाग लूं।"[36]

(2) एक पगलाई सस्पेंस कथा-

यह कहानी एक विष्णुप्रिया नामक लड़की की कहानी है। विष्णुप्रिया का जीवन एक दुखी स्त्री के जीवन के समान है। वह विष्णुप्रिया जिसकी माँ ने अपने आपको मार डाला था और उसका बाप भी। विष्णुप्रिया की माँ हारमोनियम बजाने की शौकीन थी। जब घर वाले ने कहा कि संगीत सीखकर घर के बाहर भी सबको सुनाओं तब उसकी माता ने मना कर दिया । फिर विष्णुप्रिया की माँ की शादी कर दी गयी, उस से एक सन्तान विष्णुप्रिया हुई। उसका पिता भी उसकी माँ के मर जाने के बाद मर गया। इस सस्पेंस कथा में यह मिलता है कि विष्णुप्रिया नजदीक के फारम में भेज दी गयी जहाँ कुछ रिश्तेदार रहते थे,वहा दो कुत्ते थे जिनके साथ विष्णुप्रिया अपना समय बिताती थी। माँ की मृत्यु के कुछ समय उपरांत ही घर में एक नौकरानी लायी गयी। नौकरानी बांग्लादेशी थी। वह झक्क सफेद साड़ी पहनती थी, बोलती कुछ नही थी, केवल हँसती थी। जब वह हँसती थी तो उसके दाँतों के बीच जर्दे की भूरी लकीरे खिड़की से जंगलो सी चमकती थी। अचानक एक रात कुत्तों के बीच लेटी नौकरानी मर गयी। पता यह चला कि साँप ने उसे डस लिया। एक ओर अपने माता की मृत्यु, दूसरी ओर नौकरानी की मृत्यु से विष्णुप्रिया पूरी

तरह टूट चुकी थी अपने जीवन में ऐसे हादसे देखकर वह बिल्कुल पागल सी हो चुकी थी। संसा र से विष्णुप्रिया का मन उब चुका था।

विष्णुप्रिया का विवाह एक काँजी से हुआ जो मुर्गियां पालता था। अब वह रिटायर्ड हो चुका था पर व ह अपने जीवन से सन्तुष्ट न थी और अन्त में वह भी अपने आपको हताश-निराश देख रही थी। एक स्त्री की हताशा का जिक्र तथा उसके जीवन में दुखों की कथा को लेखिका ने देखा है। मृणाल पाण्डे कहती है कि- "विदा के दिन अलसुबह सबकी नजर बचाकर विष्णुप्रिया कुत्तो, गायों और मुर्गियों की चमड़ी के परजीवी मारने वाले पाउडर का एक जंग खाया टिन एक कनकटी फोटू के सात अपनी अटैची के एक उपेक्षित कोने मे रख लिया, और फिर जाकर ऐ पहुड़ रही, जैसे मर गयी हो।"[37]

(3) उमेश जी-

'उमेश जी' नामक कहानी में तीन स्त्री पात्र है। इसके अलावा उमेश जी और उनका पी.ए.हरिहरन तथा उनके साथियों का जिक्र किया गया है। इस कहानी में नायिका बेरोजगारी से त्रस्त है। वह हर जगह नौकरी ढूढ़ती है परन्तु नौकरी कहीं नही मिलती। वह नौकरी की तलाश में हर जगह जाती भी है परन्तु कोई काम नही मिलता। हमारे देश में स्त्रियों के लिए रोजगार आवश्यक है परन्तु मिल नही पाता। नौकरी के नाम पर उऩका शोषण भी होता है। कहानी में नायिका अपनी बेटी से पड़ोस में रहने वाले उमेश जी के बारे में बताती है। उमेश जी भी उनसे अपनी बेटी को भेजने के लिए कहते है। जब नायिका उमेश के दफ्तर में जाती है, वहाँ पहुँचकर

जब उमेश जी के बारे में पूछती है तो पता चलता है कि अभी वो बाहर गए हैं। नायिका कई घण्टे इन्तजार करती है, वह घर से 14 किमी यात्रा करके गयी है और अब वहाँ भी भटक रही है। उसको लग रहा था कि अब वे नही आएंगे, नायिका को वापस लौटना होगा।

मगर कुछ समय बाद उमेश जी आते है और बात होती है तो उमेश जी कल आने को कहते है। मृणाल पाण्डे ने दफ्तरो में स्त्रियों के साथ हो रहे यौन शोषण का चित्रण किया है। उमेश जी के कार्यालय में जाने पर उमेश जी नायिका से कहते है कि ये नौकरी बिना कोशिश किए पाना चाहती है। उनकी अश्लील हरकतें तथा देखने, उठने, बैठने का अन्दाज नायिका को पसन्द नही। नायिका अंततः नौकरी छोड़ देती है वह नौकरी नही करती। कामकाजी स्त्रियों के साथ आफिसों, आदि में हो रहे अत्याचार को लेखिका ने प्रस्तुत किया है। मध्यवर्गीय समाज की औरतें अपनी बेकारी, विवशता लिए नौकरी ढूढ़ती है, नौकरी देने वाले उनका शोषण करना चाहते हैं। हमारे समाज में उमेश जैसे लोग नौकरी देने के नाम पर स्त्रियों के जीवन से खिलवाड़ करते हैं। उनकी मजबूरियों का फायदा उठाते है। नायिका सोचती है कि जब वह उपन्यास लिखेगी तो उसमे ऐसे लोगों का वर्णन करेगी। भारतीय समाज में स्त्रियों के साथ दुहरा बर्ताव होता है। शिक्षा, रोजगार तथा राजनीति में हर जगह स्त्रियों के साथ छलावे होते हैं। स्त्रियों को जीवन की दुखद कहानी को लेकर तथा उनके मूल्यों पर बात करते हुए

क्षमा शर्मा कहती हैं कि- "इस दुनियां में हम सब बराबर है, कोई छोटा-बड़ा, तथा स्त्री-पुरुष नही है।"[38]

(4) कर्कशा-

कर्कशा कहानी में अभागन भग्गो की कहानी है जिसका पति न शेड़ी और अवारा है। भग्गों का पति रामनरेश पहले अच्छा व्यक्ति था। अपने पिता की अकेली सन्तान थी। अकेला लड़का समझकर तथा मान-सम्मान देखकर भग्गों के घरवाले रामनरेश से उसकी शादी कर दी परन्तु बाद में सब बदल गया। रामनरेश बिल्कुल निकम्मा हो गया। बात-बातपर भग्गों को मारता रहता तथा उसे कर्कशा समझता था। रात को लेट से आता था। आते ही शराब के नशे में भग्गो को पीटता और भद्दी गालियां देता था। भारतीय समाज में ऐसी घटनाएं अक्सर देखने को मिल जाती है । पति शराबी अगर हो जाए तो व ह पत्नी पर जुल्म भी करता है और उसकी जिंदगी भी बरबाद कर देता है । भग्गों अपने दर्द को अपने बहनों से बताती है पर सभी उसके किस्मत पर रोते है। समाज में औरतों के साथ अक्सर होता है। मृणाल पाण्डे ने भग्गो के जीवन को जिस प्रकार दिखाया वह इस प्रकार है- "अभागन है यह बेचारी , इसी से कभी कड़वा बोल जाती है---कोई सुख नही किया । इसने घर भी छोड़ा, मरद भी, गोद में बाल-बच्चा भी होता तो चलो छाती ठंडा लेती कि लड़के-बेटों के राज में सुख पा लूगीं।"[39]

(5) हिर्दा मेयों का मझला-

हिर्दा मेयों तथा कहानी नायक एडीटर पीताम्बर दोनो एक साथ पढ़े है। जिन्दगी के कुछ क्षण दोनों एक साथ गुजारे है। कृष्ण सुदामा की तरह दोनो साथ-साथ रहते थे। हिर्दा मेयों बाजार में सब्जी खरीदने जाता है वह देखता है कि हर चीज मंहगी है। दुकानदार से कहता है कि टमाटर क्या भाव है? दुनकानदार कहता है कि दस। तब हिर्दा मेयों बोलता है कि टमाटर न होकर बकरे का मीट हो गया। लेखिका ने महगाई का चित्रण किया है। महगाई बढ़ जाने से लोगों का जीवन जीना कठिन हो जाता है। हिर्दा मेयों महँगाई के लिए देश में राजनीति करने वाले लोगों को जिम्मेदार समझता है। कहानी में दुकानदार कहता है कि-"कैसा-कैसा देखा ठहरा हमने, पर ऐसा महँगाई का राज, गरीब के चूतड़ो पर दिन रात लात, आज ही जो देख रहे है। जो हरामी कल तक ककड़ी-भुट्टे बेचते थे, चोरी करके गली-गली खुजलिहा कुत्ते जैसे मारे फिरते थे, उनके सिर पर ये तिरछी टोपी, बदन पर आहा रे नेता छाप ये कुर्ता!---।"[40]

हिर्दा मेयों की पत्नी अपनी गरीबी का हालात बताती है। तुम देवर हुए अपने, जो स्वारथ-परमारथ का इस घर में बटवारे का हमने भोगा है, ईश्वर किसी को न दिखावे। हमारे समाज में घर का कार्य स्त्रियां ही देखती है, घर कैसे चलाना है, व्यवस्था कैसे करनी है? उन्हें ही देखना है। कैसे एक झटके में हिर्दा मेयों की पत्नी अपने दुःख की गहराइयों को बता देती है। अपने अन्दर छिपे दर्द को स्त्रियां बताती है पर आसानी से नही बहुत कुछ

बूझकर। हिर्दा मेयों के तीन बेटों में कोई कुछ नही करता था। सब निठल्ले बैठे थे इसलिए उसकी पत्नी चितिंत थी। मृणाल पाण्डे ने कहानी में गरीबी की चरम सीमा को दिखाया है साथ ही साथ गरीब के बच्चों को रोजगार भी नही मिलता यह भी एक बड़ी समस्या है। राजनीतिक लोग अपने लाभ के लिए दूसरों का इस्तेमाल करते हैं। मृणाल पाण्डे एक पत्रकार भी है इसलिए वे हर जगह जाकर रिपोर्टिंग करती हैं, देखती हैं कि लोगों के पास क्या समस्याएँ है? गाँव और शहर के लोगों की समस्याओं के करीब से देखा है। हिर्दा मेयों की पत्नी इन सब बातों को या समस्याओं को अपने घर में देखती है। एक स्त्री होने के नाते वह हर समस्या का समाधान भी चाहती है।

कहानी लेखिका ने हिर्दा मेयों की पत्नी को आधार बनाकर स्त्री जीवन की समस्या को उकेरा है। एक सामान्य स्त्री जब परिवार में रहकर मानवीय मूल्यों को करीब से झांकती है तथा अपने अस्तित्व का मूल्यांकन करती है तब वह केवल समाधान चाहती है। वह अपने परिवार तथा बच्चों के लिए जीवन समर्पित कर देती है। हिर्दा मेयों की पत्नी के रुप में लेखिका ने एक माँ के हृदय को नजदीक से टटोला है। माता के हृदय का मूल्यांकन करती हुई महादेवी वर्मा कहती हैं कि- "नारी के हृदय में जो गंभीर ममता-सजल व वीर भाव पैदा होता है, वह पुरुष के उस शौर्य से अधिक दिव्य और उदात्त रहता है। पुरुष अपने व्यक्तिगत या समूहगत राग-द्वेष के लिए या फिर अपने अंहकार की तृप्ति के लिए वीरता दिखा सकता है परन्तु नारी अपने सृजन की बाधाएँ दूर करने के लिए या अपनी कल्याण सृष्टि की

रक्षा के लिए ही रुद्र बनती है---नारी जाति के इस संघर्ष की कड़िया जहाँ अतीत से अऩवरत जुड़ती दिखाई देती है वही भविष्य की ओर अग्रसर है।"[41]

(6) मुन्नूचा की अजीब कहानी-

मुन्नूचा एक ऐसे व्यक्ति थे जो अपनी पत्नी के साथ विदेश रहते थे। अपने गांव बहुत कम आते थे। उनके गांव मे उनकी जमीन पर कोई और कब्जा कर लिया था। कुछ साल बीतने के उपरान्त मुन्नूचा के पत्नी की मृत्यु हो गयी तब उसके आत्मा की शांति के लिए पत्नी की अस्थियाँ बहाने अमेरिका से अपने गांव आ रहे थे। हरुचा गांव में सूचना देता है कि मुन्नूचा गांव आ रहे है उऩकी पत्नी की मृत्यु हो चुकी है। एक ओर मुन्नूचा की पत्नी मर गयी दूसरी ओर उनकी जायदाद पर बाहरी लोगों ने कब्जाकर लिया। उनकी इस स्थिति का चित्रण मृणाल जी ने इस प्रकार किया है- "विदेश जाने के बाद उनकी जेठी बहन मुन्नी भीजो कहीं देश में व्याही थी, जाती रही। माँ-बाप गुजरे तो अर्सा हो गया था। उनका पुश्तैनी घर भी खाली हो गया था। घर से सटे तीन नाली खेत तो तेलिया हरीराम बाजी ने अपनी जोत बता के पहले ही दाब लिए थे। अब घर पर लोगों की आँखे आते-जाते टिकती रहतीं। फिर एक दिन उधड़े उनके आसन जैसे माथे वाली एक कर्कशा सरुली नामक महिला ने काली कुँमू से आकर अपने चारेक गुंडा छाप बेटों के साथ आकर कहा हम मुन्नू हीरो के सगे विरादर हुए, करके जो डेरा डाला

तो डाल ही दिया। हरुचा की खबर थी कि उसके लड़के अवैध सुरा का धंधा करते थे। इस लिए घर में देशी कट्टा रखते थे।"[42]

मृणाल पाण्डे सरुली नामक स्त्री के माध्यम से स्त्री जीवन की दुर्दशा का चित्रण कियाहै। सरुली बहुत सामान्य महिला न थी, वह हर कार्य के लिए तैयार रहती थी। दूसरी बात इसमें जादू-टोने का चित्रण किया गया है। वाह्वय आडम्बर में लिप्त समाज सहज ही जादू-टोने में विश्वास करने लगता है। मृणाल पाण्डे ने इसका पर्दाफाश किया है। हम वैज्ञानिक युग में जी रहे है, इन चीजों से व्यक्ति को दूर रहना चाहिए। मृणाल पाण्डे कहती हैं कि- "माताओं, बहनों का तो यह भी कहना था कि सरुली जुबान की ही काली नही, टोनही भी थी। जादू टोने की चीज बस्त घराट के कंकड़, सेटुला चिड़िया के पंख, काने बैल का गोबर, ये सब पदार्थ अलग-अलग लोगों के अनुसार उसके घर में विद्यमान थे।"[43]

मुन्नूचा की पत्नी की मृत्यु हो जाने पर वह पत्नी की आत्मा की शांति के लिए झाड़-फूक करवाते हैं। कई लोगों को बुलाते हैं, रामनाथ बाजी जैसे लोगों को बुलाते है। सोचते थे कि यह कराने से उनकी समस्या हल हो जाएगी मगर ऐसा नही लगाता। कुछ समय बाद मुन्नूचा फिर चले गए अब वे सारी सम्पति छोड़कर हरुचा को दे गए। एक चिट्ठी आयी जिसके साथ चेक भी था तथा मुन्नूचा अपनी सम्पत्ति विलायत के किसी मन्दिर को दानकर गये थे।

(7) बीज-

बीज कहानी में कृषि जीवन की व्यवस्था का उल्लेख मिलता है। कृषि करने की बारीकी, मशीनों तथा कई किस्म के बीजों का चित्रण है। कृषि के क्षेत्र में मनुष्य को बहुत मेहनत भी करना पड़ता है। इस प्रकार सैप (साहब) की जिन्दगी तथा खेती के प्रति उनके रुझान को मृणाल पाण्डे ने अपनी कहानी का केन्द्र बनाया है। आजकल बाजार में जो भी बीज मिलते है उनमें भी काफी मिलावट होती है, उनके बारे में सही जानकरी रखना तथा उनका उचित प्रयोग करना किसानों के लिए एक बड़ी चुनौती है। शुरू में ही कहानीकार ने लिखा कि बूढ़ा थोकदार उदासी से कहता है कि किरासन के धुँए से गंधाती चाय का गिलास थमाते हुए "ये जो हरित किरांती बाले बीज बाहर से आए न सैप, उनका जादू देख के अपनी धरती के बीज उच्चेड़ (नोच) के उपाड़ (उखाड़) के भनका (केक) दिए हम लोगों ने पर अपने बीज के बिना कभी खेतों में बरक्कत हुई है किसी के वहाँ?"[44]

(8) सुपारी फुआ-

मृणाल पाण्डे द्वारा लिखित यह कहानी बड़ी रुचिकर है। सुपारी फुआ नामक स्त्री, एक विधवा स्त्री है। सुपारी फुआ के बारे में कहा जाता है कि वह इतनी पुरानी थी कि माँओ, चाचियों से उनके बारे में सुना भर गया था। लेखिका ने पुरानी कथा का आधार बनाकर सुपारी फुआ का उल्लेख किया है। घर-परिवार में सुनी-सुनाई बातें ही कहानी का रहस्य खोलती हैं। लेखिका का कहना है कि बस इतना सापता चलता है कि कभी एक दिन

बड़े लोग जाकर सुपारी फुआ को उसकी ससुराल से वापस ले आए थे, तब से वह यहीं थी।

आने वाली पीढ़ी दर पीढ़ी लोग राय देते थे कि कई वर्ष पहले इसी घर में जन्म लेने वाली विधवा सुपारी फुआ की इज्जत इस घर की इज्जत थी। बरसो सफेद गाढ़े रंग की धोती में लिपटी सुपारी फुआ घर के एक कोने में पड़ी रही। जब सुपारी फुआ के पति की मृत्यु हो गयी तब उनको बहुत कष्ट हुआ। दुःख से पीड़ित सुपारी फुआ को जब मायके लाया गया तो लोगों ने यही कहानी कही कि- "ससुराल की उपेक्षा और विधवा के आचारों से सुखायी गयी उनकी देह में प्राण लगता था कि बस मायके की डेहरी देखने भर के खातिर अटके हुए थे। उनके कानों की लोड़ियां पलट चुकी थी और नाक भी टेढ़ी हो गयी थी जिसे देखकर जानकार बूढ़ियों ने कहा था कि हा! लड़की की जात-अब चली, कि तब चली!"[45]

ससुराल में उपेक्षित रहने के बाद सुपारी फुआ का कोई सहारा नही रहा तथा उनका हिस्सा भी उन्हें नही दिया गया, परिवार वालों ने उन पर जुल्म किए। यहाँ लेखिका ने एक विधवा स्त्री का जिक्र किया है कि किस प्रकार उसके पति के गुजर जाने पर उसके परिवार वाले तथा पति के भाई आदि दुश्मन बन जाते है? उसे पराया समझने लगते हैं। हमारे समाज में न जाने कितनी ऐसी सुपारी फुआ भटक रही हैं? समाज में विधवाओं की स्थिति बहुत खराब है, उनका कोई सहारा नही है। स्त्री कुछ न बोले सब कुछ सहती रहें, वह नौकर बनी रहे समाज यही चाहता है। यह समाज केवल

फायदा देखता है। यह बात जब कही जाती है कि स्त्रियाँ समाज का आधा हिस्सा है तब तक तो ठीक है लेकिन जैसे ही उनके अधिकार, अस्तित्व की बात होती है तो लोग कमियां निकालना शुरु कर देते हैं। सुपारी फुआ जब मायके में थी तब उनकी माँ ने उनसे कहा था कि- "लली, मायके की रोटी तोड़नी है तो आँख कान पर लगाम देकर इस चमड़े की जीभ पर तुझे पट्टा ताला जैसा डालना होगा।"[46]

फुआ अब वृध्द भी हो चली थी। यह बताया जाता है कि फुआ की उम्र लम्बी थी। लगभग 105 वर्ष का जीवन फुआ ने जिया। फुआ जैसे-जैसे बूढ़ी हो जा रही थी वैसे-वैसे उनके शरीर तथा हाथ-पैर में ताकत कम होती जा रही थी। लोग उन्हे देखकर अन्दर ही अन्दर बुरा मानते थे पर फुआ को कभी किसी ने कुछ कहा नही। फुआ सबसे लिए आदर्श एवं दुलारी बनी रही। हमारे समाज में बुजुर्ग तथा स्त्रियों का सम्मान सदैव से होता रहा है, सुफारी फुआ भी सम्मान के साथ मायके लायी गयी थी क्योकि ससुराल में कोई उन्हे सम्मान नही दे रहा था। अन्ततः एक ऐसा वक्त आया कि सुपारी फुआ ने आँख मूंद ली। सुपारी फुआ के मर जाने से ऐसा लगा जैसे सदियों से चली आ रही परम्परा तथा मूल्य बोध ध्वस्त हो गये।

(9) **अब्दुल्ला-**

अब्दुल्ला एक लड़का है। यह एक ऐसे लड़के की कहानी है जिसकी माता मर गयी है। उसका बाप दूसरी शादी कर लिया है। अब्दुल्ला की

सौतेली माँ अब्दुल्ला के साथ बुरा बर्ताव करती है। अपनी सौतेली माँ से तंग आकर वह घर के बाहर ही रहना पसन्द करता है। उसका बाप भी उस पर ध्यान नही देता है। स्कूल में अब्दुल्ला पढ़ता है और जब छुट्टी होती है तब सब बच्चे घर जाते है मगर अब्दुल्ला घर नही जाना चाहता। लेखिका कहती हैं कि- "छुट्टी की घण्टी बजने के बाद जब हम सब हवा के वेग से घर भागने को तैयार होते थे तो भी अब्दुल्ला उदास चेहरा लिए धीमे-धीमे किताबें-कापियां बस्ते में ठूसता रहता। उसे देखकर लगता था कि वह जाना टालना चाहता है,जितनी देर हो सके।"[47]

कक्षा पाँच में पढ़ने वाली विन्नो अब्दुल्ला के दर्दे को समझती है। वह जानती है कि उसकी सौतेली माँ अब्दुल्ला का ख्याल नही रखती उल्टे उसे परेशान करती है। विन्नो कहती है कि तू चिन्ता न कर मेरे मामू पुलिस अफसर है वह उनसे उसकी शिकायत करेगी। अब्दुल्ला पुलिस से नफरत करता था, उस पर विश्वास नही करता था क्योंकि हिन्दू-मुस्लिम दंगे में उसका चाचा मारा गया था तब पुलिस कुछ नही कर सकी। आज भी ऐसे कई दंगे होते है, जहां पुलिस देर से आती है, लोगों की जान चली जाती है। पुलिस तंत्र कमजोर हो गया है, भ्रष्टाचार फैल रहा है। मृणाल पाण्डे ने कहानी के माध्यम से शासन व्यवस्था तथा पुलिसिया तंत्र पर तंज कसा है। कहानीकार ने सौतेली माँ के व्यवहार को दिखाया है कि एक सौतेली मां एक लड़के की कितनी यातना देती है। वह बालक उसके आतंक से कितना दुखी है? यहां तक दिखाया गया है कि अब्दुल्ला सोने से पहले

अल्ला से दुआ करता था कि- "अल्ला उसके गुनाहों को माफ करे लेकिन उसके जीते जी कुत्ते की जिन्दगी जीने पर मजबूर करने वाली सौतेली माँ को कतई नही, कसम कुरान मजीद की, विन्नो इस पूरे शहर में सबसे सख्त दिल पाया है।"[48]

(10) विष्णुदत्त शर्मा के लिए एक समकालीन नीति कथा-

इस कहानी को लिखने में लेखिका ने कई सूक्तियों का सहारा लिया है। सूक्तियों के माध्यम से समाज में व्याप्त अराजकता एवं लोगों की मानसिक प्रकृतियों की ओर इशारा किया है। हमारे समाज में लोगों को देखिए कि अपने स्वार्थबस वे किसी का लाभ नही देखते, केवल अपना स्वार्थ सिध्द करते है। जैसे-जीव लोक में विद्यमान होते है वातानुकूलित कमरे में पढ़ी जाने वाली योग्य पत्रिकाओं की ही धरोहर, (ग्राम्य चौराहों पर पढ़े जाने वाले पत्रों में विज्ञापन पात्रता कहाँ? मृणाल पाण्डे ने सूक्तियों के माध्यम से लोगों की समस्याओं को भी दिखाया है। समाज में लोग हर समस्या से निजात पाना चाहते है तथा अपना स्वतन्त्र जीवन जीना चाहते हैं। अपने रिपोर्ट परक लेखन में लेखिका ने कलकत्ते की झोपड़ पट्टी में काम करने वाली सुंदरी अध्यक्षा की कई बातों का जिक्र किया जो इस प्रकार है- "उनका अपना दफ्तर झोपड़ पट्टी एरिया में नही, वहाँ की गलियों में कार पार्क करना और चलकर पहुँचना नामुमकिन है, उनका दफ्तर चौरंगी में है। जहाँ वे सप्ताह में पाँच दिन बैठती है, उनके कार्यकर्ता उनसे जब चाहे संपर्क कर सकते है, दस से पाँच के बीच सप्ताह में पाँच दिन। आपको

कभी आकर देखना चाहिए। हमारे युवा कार्यकर्ताओं की ऊर्जा, उनका उत्साह, वे मुझसे झनकारती अंग्रेजी में कहती है।"[49]

(11) चार दिन की जवानी तेरी-

इस कहानी में लेखिका ने सम्पादकों के जीवन का हवाला प्रस्तुत किया है साथ ही साथ अंग्रेजी और हिन्दी पत्रकारिता का उल्लेख किया गया है। सम्पादकों एवं पत्रकारों की हैसियत क्या है? संस्था में कार्य करने वाले बाबू एवं चपरासियों की नीयत में झोल है। उनकी दादागीरी, लेन-देन तथा दूसरों को परेशान करने का तरीका क्या है? बाबू एवं क्लर्क बिना पैसे लिए एक कार्य नही करते। उनको हर कदम पर पैसा चाहिए, उनका अपना एक संगठन है जिसको चाहे उसको परेशान करेगें। आफिसों एवं दफ्तरों में बाबूओं के क्रिया-कलाप पर मृणाल पाण्डे ने करारा व्यंग्य किया है। एक सामान्य आदमी तथा छोटे अधिकारियों को बाबू और चपरासी कैसे मूर्ख बनाते है? उनकी मजबूरियों का फायदा उठाकर पैसा ऐठ लेते है। आज भी यह चल रहा है। किसी भी आफिस या कार्यालय में जाइए, बिल जमा करने, कागज निकलवाने, डाक्यूमेंट वेरीफिकेशन, पत्राचार करने, डिग्री लेने, किसी आफिस में कार्य जल्दी कराना हो इन सब जगह बाबुओं एवं क्लर्कों का बोलबाला है। ये सब लोग लोगों से मनमानी पैसे वसूलते है। यदि कोई नही दिया तो उसका कार्य भी नही करते ऊपर से धमकियां भी देते हैं।

कहानी के प्रारम्भ में सम्पादक जी की विवशता एवं कमजोरी का चित्रण मिलता है। एक प्रसिध्द सम्पादक तो है लेकिन उस संस्था के बाबूओं

एवं चपरासियों से डरते है और यह कहकर बात को टाल देते है कि हमें तो अपनी नौकरी करनी है, अपनी सर्विस बचानी हैं। दूसरी बात यह भी है कि नौकरी करना उनके लिए जरुरी भी है घर में ज्यादा कोई कमाने वाला नही है कोई, सारी जिम्मेदारी सम्पादक जी के ऊपर ही है इसलिए सम्पादकी का कार्य संभाले हुए है। डाक्टर कहता है कि बेड रेस्ट लो। पर अपनी तरफ़ के लोगों में आप जानते है। चार-पाँच लाख से कम डायरी नही- वे कहते फिर अनावश्यक रुप से जोड़ते आ, पकी बात और है। सर पर माँ-बाप है, खुद यंग है। जोरु न जाता, अल्ला मियाँ से नाता।

मृणाल पाण्डे ने विभाग में चपरासियों की जो पोल खोली है वह बहुत ही निन्दनीय है। चूंकि मृणाल पाण्डे एक पत्रकार भी है इसलिए वह आए दिनों चपरासियों एवं बाबूओं की आए दिनों हरकत देखती रहती थी। यही कारण है कि उन्होने इन सबको अपनी कहानी का केन्द्र बनाया है। विभागीय चपरासियों की अराजकता इस प्रकार थी- "वे हमेशा या तो सीट पर बैठकर टाँग हिलाते, एक दूसरे पर फोहस रिमार्क कसते या लाटरी जीतने की जुगतें भिड़ाते देखे जा सकते थे। दूसरों की चिठिठ्याँ पढ़ना, अनुपस्थित लोगों के लिए आए टेलीफोन पर उल्टी-सीधी बातें करना, विभाग में आम शुगल की तरह व्याप्त थे।"[50]

इस प्रकार इस कहानी में एक ओर संपादक महोदय की नौकरी का सवाल, जहाँ वे राजनीतिक टिप्पणी करने से बचते थे। नौकरी करते हुए अपने परिवार को चलाने की चिन्ता थी वही दूसरी ओर चपरासियों, बाबूओं

की तानाशाही का जिक्र है, उनसे जो उलझा वह गया। सम्पादक महोदय ने एक जगह कहा भी था कि- "यहाँ के चपरासियों से न उलझो, सब उपर वालों के आदमी है, भइया। पेस्टिंग के विलियम की तरह देखते-देखते चाकूबाजी पर उतर जाएँगे, तब भी उनको कुछ नही होगा। आप तो अपनी इज्जत बचाओ, उनसे अदावत बहस मत करो।"[51]

(3) यानी कि एक बात थी (कहानी संग्रह)-

'यानी कि एक बात थी' मृणाल पाण्डे का एक स्त्री मनोविज्ञान जैसी कहानियों का संग्रह है जिसमें लगभग 28 कहानियाँ है। इन कहानियों के माध्यम से लेखिका ने स्त्री जीवन में आने वाली अड़चनों, उसकी वैवाहिक स्थिति, तथा घर-परिवार की उलझनों, सामाजिक दावपेचों का जीवन प्रस्तुत किया है। अपनी इस सभी कहानियों के बारे में वे कहती भी हैं कि- "अच्छी हैं या बुरी प्रस्तुत संकलन में मेरी जो भी कहानियाँ है, उन्हे मैं अपने आप में सम्पूर्ण और पुर्नरचना के लिए अनुपयुक्त मानती हूँ। शायद इसी वजह से टी.वी. सीरीयल या मंचन के लिए उन्हे मांगे जाने पर मै किसी खास हर्ष या उत्सुकता का अनुभव नही कर पाती।"[52]

(1) कोहरा और मछलियाँ

मृणाल पाण्डे ने पुस्तक कि प्रस्तवाना में ही बता दिया था कि उनकी यह पहली कहानी थी। यह कहानी (1967) में लिखी गयी तथा 'धर्मयुग' नामक पत्रिका में प्रकाशित हुई थी। इस कहानी में कुल तीन स्त्री पात्र है,

रति, ममी, और बन्नों। रति एक सामान्य स्त्री है, वह पढ़ने-लिखने वाली स्त्री है। बानो कैलिफोर्निया में रहती है। वहाँ की यादों, माहौल तथा मौसम का बखान करती है,। ममी कई लोगों से सम्पर्क करने वाली स्त्री है, वह सबके साथ घूमना, खाना तथा मनोरंजन करने में मस्त रहने वाली स्त्री है। कोहरा जहाँ एक ओर अंधेरा, निराशा तथा निगेटिव थाट की ओर इंगित करता है वही मछलियाँ आन्नद, जीवन के संघर्ष तथा अनुभूति की गाथा को व्यक्त करती है। कहानी के प्रारम्भ में ही लेखिका कहती हैं कि-"कोहरे के दैत्य ने अपनी सशक्त कलाई से आधे ताल पर एक अभेद चादर तान दी थी। इक्के-दुक्के सैलानी, जो बड़े जोशोखरोश से नौका विहार करने के इरादे से निकले होगे, जल्दी-जल्दी पतवार चलाकर किनारे पहुचने की चेष्टा कर रहे थे।"[53]

स्त्री जीवन की कड़वाहटों एवं दर्द को लेखिका ने बन्नो के माध्यम से व्यक्त किया है। बन्नो, अंकल भूषी से परेशान है। अंकल भूषी उसके साथ गलत तरीके से पेश आते है, उसके ऊपर अपना अधिकार जमाना चाहते है पर बन्नो सर्तक है वह अपने जीवन को बर्बाद नही होने देना चाहती। आज भी हमारे समाज में अंकल भूषी जैसे लोग अक्सर मिल जाएंगे जो स्त्रियों पर अधिकार करके फिर उनका फायदा उठाना चाहते है। स्त्री को खिलौना समझने वाले लोग शोषण तो करते ही है यहाँ तक की अपने को फसता देखकर अपने रास्ते से हटा देते है अर्थात् हत्या भी कर देते है। स्त्री की मानवीयता पर बात करते हुए चित्रा मुदगल कहती हैं कि- "मैं स्त्री पुरुष के

समान साझेदारी की पक्षधर हूँ किन्तु उसके अहंवादी शोषण स्वरूप की नही–पुरुष को, उसको बाड़ से मुक्त कर बराबरी का दर्जा देना होगा–नही देता तो स्त्री को घर-परिवार और समाज के आतंक से आतंकित न होकर खोखली दिवारों से सिर पटक-पटक कर प्राण देने के बजाय बाहर निकलने का साहस जुटा आत्मनिर्भर हो नये सिरे से जीवन जीने के विकल्पों को खोजना चाहिए।"[54]

रति शान्त स्वभाव की स्त्री है। वह हमेशा अकेले में रहती है। अकेलापन होने के कारण उसके पिता कहते हैं कि हम उम्र के लोगों के साथ रहा करो परन्तु उसको कोई पसन्द नही है। रति अपने ही अर्न्तद्वन्द्व में घुटती रहती है, अपनी मंजिल उसको कब मिलेगी पता नही? तीसरी स्त्री ममी है जो सदैव भूषी अंकल पर फिदा रहती है, उनका गुणगान करती है। वह बड़े-बड़े लोगों से सम्पर्क रखने वाली औरत है। वह बानो और रति से आगे है, विचार धारा में खुले स्वभाव की है।

कोहरा और मछलियां कहानी स्त्री जीवन के कई रहस्य को खोलती है। जहाँ स्त्री में एक जगह तनाव भी है, वही लगाव भी। वह भी खुलकर जीना चाहती है ऐसे नही बल्कि मुक्त गगन में। पर जीवन में कोहरे की तरह आने वाली निराशा उसे मंजिल तक पहुचने में रोकती भी है। अपने ही संसार मे मस्त रहने वाली स्त्री रुपी मछली अपने दुनियाँ से निकलना नही चाहती। वह कहती है कि मुझे देवी मत कहो बस एक स्त्री ही रहने दो। पितृसतात्मक समाज देवी बनाकर भी धम्म से नीचे ढ़केल देता है। शायद

रति इसलिए उस छलावे से दूर रहना चाहती है। अपने अस्तित्व को बचाये रखने वाली रती स्वयं समर्थ होना चाहती है। रती वही सोचती है जैसा बोट वाला आदमी सोचता है-"फिर आ गया हरामी कोहरा। सारा सीजन चौपट कर दिया साले ने, अपने ही हाँथ को हाँथ नही सुझाई देता फिर वोट वालों को किनारा क्या दिखेगा! स्याला! "[55]

(2) चिमगादड़े-

चिमगादड़े कहानी में मारिया, सोनिया, उसकी माता तथा बूढ़े सैमुअल की कथा का उल्लेख भी मिलता है। मौसम की पहली बरसात से कहानी का प्रारम्भ होता है। एक गुनगुनी गर्मी लिए जमीन का सोंधापन उठ पड़ा, हल्की बारिश हो रही थी। हल्की बौछार खिड़की की मुडेर को भिगो गयी टप्-टप्-टप। कहानी में मारिया की माँ का जिक्र दर्द भरा है, वह बूढ़ी भी है, शरीर का कोई अंग कार्य नही करता। यहाँ तक की डाक्टरों की दवा भी काम नही करती। मारिया की माँ अपने दोनों बेटियों से परेशान है, दोनो लड़कियां कोई काम तक नही करती। घर का सारा का नौकर बूढ़ा सैमुअल करता है। अपने को बेकार समझने वाली मारिया की माँ कहती है कि-"तुम दोनों के लिए बस एक जिंदा लाश भर हूँ--- तुम्हारा बस चले तो कुत्ते की तरह बस एस रोटी डाल दो।-ठीक कहते थे डाक्टर कैनियल की अगाथा आदमी का अपना ही खून सबसे ज्यादा दगा देता है।"[56]

मारिया और सोनिया के घर की हालत कमजोर है, अत्यन्त गरीबी होने के कारण किसी तरह घर का खर्च चलता है। मारिया कुछ काम नही

करती, बस सोनिया ही स्कूल से पैसे कमाती है उतने पर भी इतना खर्च। घर भी जर्जर हो गया है–सामने दीवारों पर सीलन के चकते से उभर आए थे। प्लास्टर भी जगह-जगह निकल गया था। सारी की सारी इमारत जैसे गल-गलकर बैठती जा रही थी। घर की बदहाल स्थिति देखकर मारियां एक ही शब्द को कई बार कहती है, यह शब्द कई बार आया है---हुह कोई घर है यह भी---। यह शब्द निराशा, हताशा और अन्दर के मनोद्वन्द्व को व्यक्त करता है। हमारे समाज में नौकरों की क्या हैसियत है? इसको भी इस कहानी में दिखाया गया है। बूढ़ा सैमुअल घर का कार्य भी करता है उसके बावजूद घर की सभी तानें भी सुनने पड़ते है। बड़ी मजबूरी में सैमुअल नौकरी करता था फिर भी घरकी सभी चीजें कम होने पर सैमुअल को ही सुनना पड़ता था। सैमुअल ने चिमटे से आग कुरेदी और कहा- "हर चीज पर तो बड़ी मेम साहब बोलती है कि सस्ते दाम वाली लाना। अब बारा आने में आजकल सूखी लकड़ी कहाँ से आयेगी। बोतल भर किरासन का तेल तक तो आता नही, ऊपर से डाँटने को हर कोई।"[57]

स्त्रियां अक्सर चिमगादड़ों, कुत्तो, बिल्ली तथा छिपकलियों से डरती हैं जिसको लेकर लेखिका ने जिक्र किया है। इसी का फायदा पड़ोस के छोटे बच्चे भी उठा रहे थे। वे जानते थे कि मारिया इन सबसे डरती है इसलिए बच्चे खूब तेजी से फल तोड़ने के बहाने कंकण उछालते थे–ही, हो करके तथा चिमगादड़, चिमगादड़ कहकर डराते थे। लड़कों ने जैसे कहा कि देखो काली चिमगादड़ वैसे ही-"मारी ने पाया कि उसके हाँथ से कपड़ो का गट्ठर

न जाने कब फर्श पर गिर पड़ा है। खिड़की बन्द कर उन्हे उठाने को झुकी तो चप्पल का आखिरी फीता भी तड़ाक, से टूट गया।"[58]

(3) ढलवान-

ढलवान कहानी एक ऐसे परिवेश की कहानी है जिसमें, आम स्त्रियों के जीवन को टटोला गया है। घर-परिवार में रहकर स्त्री मानवीय जीवन के हर पहलुओं से टकराती है, उससे सीखती भी है। घर के बाहर बैठे वकील साहब अकबार पढ़ रहे थे फिर अचानक मौसम का मिजाज बदला और वे अन्दर चले गए। यह कहानी मानव जीवन के अनुभवों को भी साझा करती है। इसके अलावा कहानी लेखिका ने अपने बचपन के दिनों की हँसी-ठिठोली तथा गप्प को कहानी में साझा किया है। वे बचपन से ही हँसमुख स्वभाव की थी तथा सबसे साथ अपनी बातें रखती थी। मौसी उनकी अक्सर कहा करती थी कि लड़कियों को ज्यादा नही हँसना चाहिए तथा शान्त रहना चाहिए। घर-परिवार में आज भी लड़कियों को यही सिखाया जाता है तथा उन्हे लोक-मर्यादा की बातें बतायी जाती है। जिस स्त्री स्वातंत्रय की बात आज हो रही है उस स्त्री को तो बचपन से ही दबाया जाता है, तथा आज्ञाकारी बनने की सीख दी जाती है। लड़कियों को बचपन से ही तेज बोलने तथा अनैतिक कार्य न करने की सलाह दी जाती है। मौसी कहती थी कि-" लडकियों को बहुत ऊँची आवाज में हँसना-बोलना शोभा नही देता, खासकर लड़को से।"[59]

(4) औउर-

प्रस्तुत कहानी' और सुनाओ, क्या हाल-चाल है'? नामक वाक्य से शुरु होती है। यह वाक्य कहानी में अक्सर जीतू काका कहते है, जीतू काका कहानी के नायक के पिता के मित्र है। कहानी में लखनऊ महानगर का चित्रण किया गया है। जीतू काका के परिवार में मात्र जीतू काका और उनकी पत्नी है। पुत्र सुरेन्द्र पहले ही मर चुका है इसलिए जीतू काका निराशा और हताशा में अपना जीवन गुजार रहे थे। यहाँ पर एक पिता के पुत्र मोह तथा उसकी कारुणिक दशा का चित्रण भी है। संसार में यदि किसी पिता का पुत्र मर जाय तो उससे बड़ा दुःखकुछ नही है। यही हाल जीतू काका का था। घर की गृहस्थी का कार्य स्त्रियाँ भी देखती है। घर में क्या बनाना है, घर कैसे चलाना है? इन सबकी जिम्मेदारी स्त्रियों के ऊपर ही होती है। जीतू काका की पत्नी भी घर के आन्तरिक कार्यो की जिम्मेदारी देखती थी। घर की गरीबी एवं नाजुक हालात का चित्रण लेखिका ने किया है। जीतू काका की पत्नी के माध्यम से स्त्री जीवन की विडम्बना एवं पारिवारिक दशा का चित्रण लेखिका ने बड़ी आसानी से किया है। जीतू काका की पत्नी कहती है कि- "अरे बेटा तुम्हारी वजह से तो हमे भी यह सब मिल जाता है, वरना आज-कल तो अच्छा खाना देखने को तरस जाते हैं। सब्जी तो कोई रुपए पाव से कम नहीं। गेहूँ चावल तो पूछो ही मत। घी चखे बरसों निकल गये।,,,,,अब और तो और शक्क र भी बंद है। लूट मची है, लूट,,,,,जरा रायता देना, जी।"[60]

(5) व्यक्तिगत-

व्यक्तिगत कहानी माँ और बेटे के व्यवहार की कहानी है। एक बेटा अपनी माँ से कितना लगाव रखता है? कोई भी बालक जब छोटा होता है तो वह अपनी माँ से एक पल के लिए अलग नही होना चाहता और माँ भी बच्चे का सदैव ध्यान रखती है। इस संसार में अपनी माँ से कौन अलग रहना चाहता है, शायद कोई नही? कहानी लेखिका ने बेटे और माँ के प्यार और लगाव को बड़े आत्मीयता से व्यक्त किया है। माँ तो कभी अपने बेटे से अलग नही रह सकती, बेटा भी नही रहता। यह कहानी मानवीयता के उस धरातल को व्यक्त करती है जहाँ मानवीय मूल्य अपने आप व्यक्त होते है।

कहानी नायक ने अपनी माँ के व्यक्तित्व को बड़ा सहज बताया है। उसकी माँ किसी भी व्यक्ति या पुत्र के लिए माँ ही थी। पुत्र के प्रति स्नेह और करुणा एक माँ की अहमियत को दर्शाती है। कहानी में माँ का अस्तित्व जो मिलता है वह इस प्रकार है- "माँ उससे हमेशा बराबरी के लहजे में बात करती थी, जैसे वह उन्ही की उमर का हो। अपनी उमर का कोई दोस्त था भी नही। कैसी अजीब बात है, उसने उनीदे आश्चर्य से सोचा। तब कभी इस बात को महसूस नही किया था और अचानक याद आती है तो लगता है कि कुछ उसके अपनी उम्र के दोस्त होने चाहिए थे। हांलाकि माँ का साथ उकताने वाला लगता हो, तो यह बात भी नही थी।"[61]

इस प्रकार इस कहानी में माँ और पुत्र का प्रेम तथा जीवन की सहजता को दिखाया गया है। कहानी नायक अपने बाबा के व्यक्तित्व को जीवन भर नही जान पाता केवल माँ के व्यक्तित्व से परिचित है। बाबा के संदेह का पता वह जीवन भर नही लगा पाता, वह जीवन के इस मनोविज्ञान एवं द्वन्द्व में फसा रहता है।

(6) शरण्य की ओर-

'शरण्य की ओर' कहानी 'यानी कि एक बात थी' इस कहानी-संग्रह की सबसे बड़ी कहानी है। इस कहानी में तीन सखियों की जीवन-शैली एवं स्वच्छंद जीवन का चित्रण मिलता है। डालो, उमी, विजया तीनों सखियों में उमी सबसे अधिक सूझबूझ वाली एवं स्वतन्त्र विचारों वाली लड़की है। वह अपने विचारों को बड़ी आसानी से सबके सामने रखती है, वह सिगरेट भी पीती है। हमारे समाज में लोग पाश्चात्य संस्कृति को बड़े धड़ल्ले से ग्रहण कर रहे हैं। भारतीयता को छोड़ विदेशी चीजों के प्रयोग करने में अपने को गौरवान्वित महसूस करते हैं जो कि अच्छा नही है।

पाश्चात्य प्रभाव के कारण उमी अपने पति का भी सम्मान नही करती, सदैव अपने मन की करती रहती है। उमी के व्यवहार के बारे में लेखिका लिखती है कि- "उमी का व्यवहार पति की अनुपस्थिति में ज्यादा खुला, सहज हो जाता है, वरना या तो दबी-दबी सी वह चुपचाप सिगरेट पीती रहती है, या निरर्थक मुस्कुराहटें–क्या उसे वह सब पिछला याद आता होगा?

उसने छिपे-छिपे ताका। उमी की कनपटियों पर बाल कुछ सफेद हो चले है। कुल मिलाकर अभी भी एक तेजस्विता है-संयमित आचार वाली नही, एक आशोकयुक्त तेजस्विता।"[62]

उमी, डालो, विजमा, नसीम, पालित सभी जंगल घूमने जाते हैं, सबका अपना अलग-अलग कमरा भी है। डालो और विजया मित्र है। विजया पढ़ने-लिखने वाली लड़की है वह बाहरी दुनिया से कम मतलब रखती है तथा सदैव अच्छे आचरण का पालन करती है। पालित विजया को सदैव परेशान करता है क्योकि पालित की पत्नी उससे लगाव नही रखती। इस कारण वह सदैव तनाव में जीता है। अधेड़ उम्र का व्यक्ति पालित विजया के करीब आना चाहता है, पर विजया को स्वीकार नही। हमारे समाज में पालित जैसे तमाम लोग पड़े है जो कुंठाग्रस्त होकर विजया जैसी लड़कियों को अपना शिकार बनाते है, उनका जीवन भर शोषण करते है। कहानी में एक व्यक्ति के मनोभावों एवं मनोविज्ञान को टटोलने का भी प्रयास किया गया है। ऐसे ही लोग स्त्रियों की स्वतन्त्रता एवं शिक्षा, आचरण आदि पर सवाल भी उठातें हैं। स्त्रियाँ शिक्षा के माध्यम से आज आगे बढ़ रही है तथा समाज को सुधारने का कार्य कर रही हैं। स्त्री शिक्षा पर बात करते हुए प्रो0 सुगम आनन्द कहते है कि- "आधुनिक युग में सबसे महत्तवपूर्ण कार्य हुआ नारी शिक्षा के प्रचार-प्रसार का जिससे नारी वर्ग को अवसर मिला की वे डाक्टर, वकील, शिक्षिका, नर्स और अन्य व्यवसायों में भागीदारी कर सकें।"[63]

(7) चेहरे-

चेहरे कहानी में कई पात्रों के चेहरों की चर्चा की गई है। व्यक्ति के चेहरों को देखकर लोग भाव का अन्दाजा लगा लेते है। आज के समय में विडम्बना यह है कि किसी के चेहरों को आसानी से कोई नही पढ़ सकता है। लोग आज भी चेहरे बदल रहे हैं। चेहरा बदलने से अभिप्राय व्यक्ति की इमानदारी, सोच एवं कर्तव्य निष्ठा से है। कोई भी व्यक्ति हो स्त्री या पुरुष, उनके चेहरों को देखकर कोई यह नही बता सकता की अमुक व्यक्ति कैसा है। हकीकत अब इतना ही समझिए कि अब कपड़ों की तरह चेहरे भी बदल रहे हैं। पात्रों की स्थिति देखिए तो सबके चेहरे अलग है जैसे मुखर्जी। कहानी के प्रारम्भ में ही देखन को मिलता है कि- "फिर नया चेहरा पहनने में भी तो कुछ टाइम लगता है। दोपहर से पुरानी जिंस के ऊपर वही नाराज मालकिन का चेहरा लगाए घूम रही थी, उसके अलावा और कोई चेहरा पहन लो तो ढंग से काम ही नही करके देंगें।"[64]

मिसेज कंम्पनी का चेहरा अलग है उनका व्यक्तित्व किसी से मेल नही करता। उनकी ठोड़ियाँ, बाहों की पुष्ट पसलियाँ, कूल्हें, छातियाँ-सब कई घड़ियों के पैण्डुलमों की तरह अलग-अलग दिशाओं में झूल पड़े। कहानी में पात्रों के चेहरों के माध्यम से व्यक्ति के जीवन की पहचान की गई है जैसे-मिसेज आगरावाला का देसी चेहरा, तेल-सिंदूर और मदरासी हीरों से चमक रहा था-इसके अलावा रस्मी खानापुरी तथा रणधीर सिंह की चर्चा की गयी है।

(8) धूप-छाँह-धूप-छाँह कहानी तिलुआ जैसे अबोध लोगों की दासता हैं। तिलुआ अपना जीवन दूसरों की सेवा करने में जीवन बिता रहा था। तिलुआ खाना भी बनाता था, पानी भी लाता था तथा घर का सम्पूर्ण कार्य भी करता था। तिलुआ जैस लोग आज भी समाज में दिखाई देते है। वह अपने जीवन को दूसरे के लिए दान कर दिया था। कहानी में पर्यावरण को बहुत सीध-सीधे प्रस्तुत किया गया है। धूप-छाँही रंग में लिखी गई इस कहानी का भाव अत्यन्त गहराई के साथ दिखाई देता है।

(9) प्रेतबाधा-

प्रेतबाधा कहानी एक आश्चर्यजनक वातावरण के साथ शुरु होती है। इसमें वातावरण का भयावह चित्रण मिलता है। कुल मिलाकर कहा जाय तो वातावरण मानवीय जीवन की विभिन्न परिस्थितियों को व्यक्त करता है। कहानी में वातावरण इस प्रकार है- "फरवरी। नारंगी-पीले मुरझाती, कसैली गंध के फूल। ताल। डबरे भर बचे हुए ताल। सिवानों की पनियाली गंध। धूलिहा पतियों के उड़ते अंबार, गंध, हवा धूल।"[65]

कहानी में इलाहाबाद और दिल्ली जैसे महानगर का चित्रण भी मिलता है। जो इलाहाबाद पहले शिक्षा का केन्द्र था अब वह राजनीतिक अड्डा बन गया है। लोग नेता बनने की कतार में है। भागम-भाग जिन्दगी में लोग कम समय में ज्यादा पाना चाहते है जैसा लेखिका ने कहा है-" इलाहाबाद

कुछ और ही चीज हुआ करता था उस जमाने में। अब तो वहाँ भी यूनीयनों की नेतागिरी ने, सुनते है सब कबाड़ा कर डाला है।"[66]

(10) तुम और वह और वे-

यह एक प्रतीकात्मक कहानी है। इसमें एक स्त्री, उसके पति तथा उसके बच्चे का जिक्र है। स्त्री बड़ी शान्त, स्वाभिमानी एवं सबका ध्यान रखने वाली है। वह एक स्त्री भी है, पत्नी भी है तथा एक पुत्र की माँ भी है। स्त्री के मन में घर के कामकाज तथा अपने पति एवं बच्चे की मनोदशा का अर्तद्वन्द्व चलता रहता है। संसार की हर स्त्री भी पति की सेवा तथा बच्चों के पालन-पोषण के बारे में सोचती है। स्त्री जीवन का हवाला देते हुए सुभाष सेतिया कहते हैं कि-" परन्तु मंजिल अभी बहुत दूर दिखाई दे रही है। वह इसलिए कि नारी चितंन और दृष्टि में तो परिवर्तन परिलक्षित हो रहा है किन्तु भारतीय समाज को सामूहिक सोच में वह रुपान्तरण दिखाई नही दे रहा, जो इतने बड़े परिवर्तन के लिए आवश्यक है। पुरुष दृष्टि आज भी औरत को अपने से दुर्बल, हेय, कमतर और अधीनस्त मानती है। पुरुष के लिए महिला एक व्यक्ति नही है, बस एक महिला है।"[67]

स्त्री घर घर का सम्पूर्ण कार्य करती है, वह थक जाती है। कहानी में वह कहती है कि मुझे माफ करना, पर अभी इतना ही नही आगे का सफर जारी है। पता नही क्यों समाज में नैतिकता का बीड़ा सिर्फ स्त्री के माथे पर रख दिया जाता है जबकि पुरुष इन कार्यो से स्वतन्त्र हो जाता है। जिस

काम में दोनों बराबर के भागीदार है वहाँ केवल स्त्री ही क्यों दोषी और चरित्रहीन मान ली जाती है। यह पितृसत्तात्मक समाज इतनी आसानी से सम्पूर्ण दायित्वों से स्त्री को मुक्त नही होने देगा क्योंकि स्त्री को समाजमें स्त्री से ज्यादा कुछ नही माना गया है। इस सन्दर्भ में लेखिका मैत्रेयी पुष्पा का कथन है- "औरत चाहे फसल की तरह हो या खेती की तरह वह घर में रहे या कोठे पर, पुरुष के लिए, सुविधा साधन' का रुप है।"[68]

(11) कगार पर-

स्त्री जीवन की पड़ताल करते हुए मृणाल पाण्डे ने यह कहानी लिखी है, जहाँ स्त्री की चेतना एवं उसकी बुद्धिमत्ता का मूल्यांकन स्पष्ट होता है। विशू कहानी में एक ऐसा व्यक्ति है जिसकी स्त्री बुध्दिमान भी है और हर एक कार्य सोच-समझकर करती है। जीवन के कगार पर विशू अपने बच्चों की देखभाल भी करता है तथा स्त्री को खुश भी रखता है। सण्डे के दिन स्त्री उसकी लेट से उठती है उस दिन घर का सारा कार्य विशू ही कर लेता है। कहानी में मिली नामक स्त्री हर कार्य के लिए अपना तर्क प्रस्तुत करती है। लेखिका कहती हैं कि- "वह कभी किसी बात को व्यंग्य से कहती है और कभी हँसी में टाल देती है, बल्कि हर बात को बड़ी गंभीरता से सुनकर उसका बारिकी विश्लेषण करती है और फिर उसकी छिपी खामियों को गिनाती है कि ऐसा, ऐसा, ऐसा है।"[69]

इस प्रकार इस कहानी में स्त्री के अधिकार, कर्तव्य, बुध्दि-विवेक आदि की बातें स्पष्ट होती है। स्त्री हर कार्य के पीछे अपना तर्क प्रस्तुत करती है, वह हर कार्य के लिए तैयार रहती है।

(12) दरम्यान-

दरम्यान कहानी में मनोहर तथा उसकी माँ, बहन का चित्रण है। कहानी में पारिवारिक उल्लेख तो है ही साथ ही साथ, मनोहर के साथी बिहारी का भी चित्रण है। मनोहर की तीन बहने हैं-शांता, शीला, क्षमा। शांता सदैव से उसकी चहेती बहन थी, उससे कोई सालभर छोटी थी। गजब की दिलेर और मुहफ़ट लड़की जो उससे लगायी शर्त जीतने के लिए रात दस बजे उसका पाजामा कुरता पहनकर मफलर में मुह छिपाए हुए अम्माजी के मुस्तैद संरक्षण को गच्चा खिलाकर भाई के साथ सेकेण्ड शो में पिक्चर देख आयी थी। मनोहर की माँ हमेशा लड़कियों को शांत रहना, सब की बात मानना, सेवा करना सिखाती थी। अम्मा कहती थी कि- "जब तक शादी का जुआं गले ना पड़े लड़कियों को समझदारी नही आती।"[70]

मनोहर अपनी बहनों का सम्मान करता था। उनके बचाव के लिए वह अपनी माँ से झगड़ जाता था। माँ हमेशा बच्चियों को अच्छी शिक्षा देती थी। मां यह भी कहती थी कि लड़कियों का जोरो से हँसना मुझे क्रोध दिलाता है। इसके अलावा इस कहानी में घर-परिवार की दयनीय स्थिति, आर्थिक स्थिति आदि का जिक्र किया गया है। हमारे समाज में लड़कियाँ प्रारम्भ में स्वतन्त्र होती है, उन पर कम जिम्मेवारियाँ होती है लेकिन शादी के बाद

पूरी दुनियाँ बदल जाती है उन्हे अपने अनुसार नही बल्कि पति के अनुसार जीना पड़ता है लेकिन जब स्त्रियों के उपर जिम्मेदारी आती है तब समझदारी भी बढ़ जाती है। उदाहरण के लिए शांता शादी के बाद स्त्रैल रोल संभाल लिए थी-यानी पूजा, पाठ, मंगल-शनीचर मंदिर जाना, गज-गज लम्बे स्वेटर सब नातेदारों के लिए बुनना, बड़ी-मगोरी तोड़ना, करवा चौथ का उपवास, उसका पति गोलमाल तो कुछ पहले से ही था, फिर अचानक उसकी एक खमीरी तोंद भी निकल आयी थी।

इस प्रकार नारी-विमर्श की दृष्टि से यह कहानी स्त्रियों की परिस्थतियों तथा उनके समग्र जीवन का मूल्यांकन करती है।

(13) कैंसर-

कैंसर कहानी एक ऐसे व्यक्ति की कहानी है जिसे कैंसर हो गया है और वह जीवन भर डॉक्टर के पास दौड़ता रहा लेकिन ठीक न हुआ। दामोदर कैंसर से पीड़ित है इसी को लेकर उसकी पत्नी सुरभी भी दुखी रहती है। सुरभी जब दामोदर के कष्ट को देखती है तब उसे केवल निराशा हाथ लगती है, अब एक ऐसा वक्त भी आ गया था कि डॉक्टर ने भी जबाब दे दिया। कहानी के प्रारम्भ में ही देखने को मिलता है कि- "रोज दरवाजे से भीतर घुसने से पहले सुरभी झांकती है, तो मन में एक अकारण आशा बिंदु कौधता है---शायद आज कुछ फर्क--?"[71]

एक ओर कहानी में यह देखने को मिलता है कि सुरभी अपने पति की बीमारी को लेकर दुखी है, वह पति की सेवा करती है। वह आशा लगाए रखी है कि उसके पति जल्द ही ठीक हो जाएगें। वही दूसरी ओर सुरभी के लड़के और-बहु भी उसका साथ छोड़ चुके है, वे केवल अपना देखते है अपने माता-पिता की चिन्ता नही करते। समाज में अब वक्त बदल रहा है, लोग मां-बाप की परवाह नही करते केवल अपनी ही दुनियां में मस्त रहते हैं। माँ-बाप को कूड़ा-करकट समझने वाली आज की पीढ़ी भारतीय संस्कृति को भूल रही है। जब तक दामोदर के मां-बाप जीवित थे तब कोई भी इधर-उधर नही कर सकता था जैसे ही वे संसार से विदा हुए सब भाई अपने मन की करने लगे। मृणाल पाण्डे लिखती हैं कि "आजकल के बेटे-बहुओं को कौन समझाए? सब अपने मन के हो गये है। घर-बच्चे देखने को नौकर है। खुद को दिनभर की नौकरी! बउबा जी होती तो? मजाल भी थी किसी बहू-पतोहू की, कि जो उनके आगे सिर उठाकर बात भी कर ले?"[72]

(14) दुर्घटना-

दुर्घटना कहानी मेंनायक अपने बापू के मौत की दास्तान बताया है। हमारे बाबा की मौत किस तरह हुई थी, उनका, रहना, खाना-पीना तथा उनके पारिवारिक संस्कार को लेखिका ने दिखाया है। बापू जी मौत एक गाड़ी से हुई थी जो एक स्त्री और एक पुरुष को लेकर आ रही थी। रात का वक्त था बापू जी आगे बढ़ गए, गाड़ी कुचलती हुई उन्हे आगे बढ़ गयी। कहानी के माध्यम से लेखिका ने एक मध्यवर्गीय परिवार के व्यक्ति की

पीड़ा तथा मौत की घटना को बड़ी बेबाकी से लिखा है। उनके संस्कृति तथा दुनिया की सच्चाई को सहज शब्दों मे व्यक्त किया है- "मैने बापू जी का बक्सा खोला, उनका कुल सामान सालों से उसी बक्से में जमा था। बक्से से भी बापू जी की महक आती थी---कुछ पढ़ाई के नोट्स थे। तीन चार नारंगी रंग की तस्वीरें थी जिनमें एक में मै बाबा की गोद में बैठा था।"[73]

(15) आततायी कहानी- मृणाल पाण्डे की संक्षिप्त शैली की कहानी है। इसमे मानवीय जीवन के अर्न्तद्वन्द्व, गहरी मानवीय अनुभूति तथा सहज स्वभाव का चित्रण है। नौकर वजीरा सिंह के मनोभाव मानव जीवन के कई अनुभव व्यक्त करते हैं। इसमें एक ताऊजी की कहानी है जो एक लम्बाकश लेते है। इसके अलावा नरेश भाई का भी चित्रण है जिनकी बीबी पहली दफा हिन्दुस्तान आयी है। उसकी मानसिकता, स्वभाव का चित्रण है। पति-पत्नी डॉक्टर है।

(16) शब्दबेधी कहानी- भारतीय एवं पाश्चात्य संस्कृति का उद्घाटन करती है। इसमे अपने-अपने धर्म एवं संस्कृति को अलग-अलग तरीके से दिखाया गया है। हिन्दू धर्म की बारिकियों एवं रहस्य दर्शन को लेखिका ने कहानी के माध्यम से अभिव्यक्त किया है।

(17) समुद्र की सतह से दो हजार मीटर ऊपर- यह एक ऐसी कहानी है जिसमें भारतीय दूतावास के सेक्रेटरी के पत्नी का चित्रण है। वह निराश और हताश है क्योकि उसके पति के पास समय नही है। भारतीय समाज में आज भी कई ऐसी वजहें हैं जिससे पति-पत्नी अलग रहते है। पति कही

और नौकरी करता है।, पत्नी कहीं और तो ऐसी मेंकई रिश्ते बिगड़ते देखे गए है। सेक्रेटरी की पत्नी हमेशा अपने को अकेला महसूस करती है क्योकि उसके पति को छुट्टी नही, बच्चे स्कूल में है। वह पहाड़ पर अकेले घूमने जाती है, वह अपने भीतर अकेलेपन के दर्द को लिए हुए है। पहाड़ पर जाकर वह सोचती है कि उसका यह दर्द भूल जाएगा मगर वहाँ भी उसे राहत नही मिलती। वहां उसको कुछ औरतें मिलती हैं जब पूछती हैं कि आप अकेले हैं तो वह सब कुछ बता देती है।

वह अपने पति के प्यार को जानती ही नही क्योकि उसके पति हमेशा सरकारी सेवा में व्यस्त है। वह कभी समय मिलने पर सारी बातें पति से कहना भी चाहती है परन्तु सुनता कौन है? समाज में इसी कारण आज भी पारिवारिक अलगाव हो रहे हैं। स्त्री केवल पैसे-और वस्तु मिल जाने से खुश नही होती बल्कि उसका हाल जानने वाला कोई हो, उससे कोई दो बातें करें, यानी प्यार की तलास में अपने पति से दूर है। अपने अन्दर अपने दर्द को छुपाए वह पहाड़ पर घूमने गयी है। वह कहती है कि- "मै कुछ कहना चाहती हूँ, पर मेरी हर बात फदकते कराहे की तरह किन्हीं झाड़ियों में आलोप हो जाती हैं। मै उन्हें क्या बताना चाहती हूँ? यहाँ अपने घर के बारे में? अपने बच्चों के बारे में? यहाँ से दो हजार मीटर नीचे बसी उस दुनिया के बारे में, जहाँ घड़िया दिन और रात बजाती हैं और कैलेण्डरों से छुट्टियां और त्यौहार निकाले जाते हैं, साल दर साल।"[74]

(18) रुबी कहानी-

-यह एक ऐसी लड़की की कहानी है जिसके माँ-बाप आपस में लड़ते रहते हैं। वे बात-बात पर झगड़ते हैं उसका असर रुबी के ऊपर पड़ता है। रुबी इन्ही सबके कारण शान्त रहती है। उसका दोस्त गिलू आदि है जिनके बीच वह अपना मन बहलाती है। समाज में जब मां-बाप ही हमेशा झगड़ते हो तब बच्चों के ऊपर इसका बुरा असर पड़ता है। रुबी की माँ अमीर घराने की औरत थी, हर बात पर अपने पति से झगड़ती थी। इतना ही नही वह कई बार जहर की गोलियां खा चुकी थी फिर भी बच गयी। पिता भी उसकी बातों को मानने वाले नही, हमेशा बहस होती रहती थी। इस कारण रुबी का मन हमेशा खिन्न रहता था वह एकान्त की तलाश करती या पड़ोस में खेलने निकल जाती थी। जब उसके दोस्त के पिता का तबादला अन्यत्र हो जाता है तब वह दुःखी हो जाती है, उनके जाने पर वह देखती रहती हैं। वह सोचती है कि अब वह क्या करे? लेखिका ने कहानी में बाल मनोविज्ञान की अनुभूति को तथा पति-पत्नी के रिश्ते की कड़वाहटों को रुबी कहानी के माध्यम से दिखाया है।

(19) कौवे कहानी- यह कहानी पति-पत्नी के बीच की गहराइयों एवं विवाह विच्छेद की समस्या को व्यक्त करती है। पति-पत्नी मेंहर बातकी उलझन को लेकर तू-तू मै-मै होती है। समाज में आज भी सामजस्य न होने के कारण ऐसी समस्याएं अक्सर देखी जाती हैं।

(20) लकीरें कहानी- एक माँ की अनुभूतियों को व्यक्त करती है। माँ अपने बच्चों से कितना स्नेह करती है, कभी उदास नही देखना चाहती लेकिन

बच्चे ऐसा नही समझते। कहानी में नायिका माँ की बात नही मानती तथा बोलती नही शांत रहती है। यहाँ तक की उसे इसी नाराजगी के इशारों एवं क्रोध की लकीरों से इशारा करती है।

(21) मीटिंग कहानी- एक ऐसी कहानी है जिसमें प्रिंसिपल कालेज में मीटिंग करते है। नायिका और उसकी सखी भी कालेज में आती है। वहा नये-नये लेखक/लेखिका आते हैं। सबके मनो भावों को जानने के लिए मीटिंग की जाती है।

(22) नुक्कड़ कहानी- पात्र रामदयाल की कहानी है जिससे वह अपनी लाचारी-बेबसी एवं महत्वाकांक्षाओं को व्यक्त करता है। अम्मा, दादा एवं पूर्वजों की हालातों का जायजा प्रस्तुत करता है। उसकी मां धैर्यवान तथा सामान्य विचारों की थी परन्तु कभी-कभी छोटी-छोटी बातों पर झुझला जाती थी। रामदयाल हमेशा परी छाप झोला लेकर चलता है यही उसकी पहचान है। उसके बारे में लेखिका ने लिखा कि- "राम दयाल ने उसे प्रचंड अजूबे के रहस्यमय क्षण में एक प्रचण्ड रहस्यमय तथ्य को गुना लिया था और इस ज्ञान की प्राप्ति के साथ राशन के मैदे की भभूत जमाकर वह हमारे आपके बीच के इस कोलाहल मय बीहड़ को चीरता हुआ निकल भागा है।"[75]

(23) गर्मिया कहानी- में गर्मियों के दिन की चर्चा है। जिस समय तापमान ज्यादा होता है। लोग गर्मी से हाफते है उस समय सामान्य मजदूर और किसान उसमे कार्य करते हैं। बाजारों मे भी चहल-हल नही होती, हवा भी गर्म चलती है।

(24) खेल कहानी- में एक ऐसी बच्ची (बालिका) की कहानी है जिसकी माँ नौकरानी है। वह दूसरों के घर काम करती है। परन्तु बच्ची अपने माँ से बहुत डरती है। प्रताप-परदीप दोनो उसके भाई है। तीनो चोरी-छुपे खेलते है। यह कहानी बाल मनोविज्ञान की अनुभूतियों, टकराहटों को व्यक्त करती है। नौकरानी (उसकी माँ) हमेसा झुझलाकर बच्चों को डाँटती है। माँ-बाप गरीब है। माँ नौकरानी है, पिता दारु पीता है। छोटे परिवारों में अक्सर ऐसा होता है जिसका असर बाद में बच्चों पर भी पड़ता है। लेखिका ने गरीब परिवार की कथा को आधार बनाकर सामाजिक विसंगतियों पर व्यंग्य किया है।

(25) बर्फ कहानी-में मृणाल जी ने मानवीय सम्बन्धों का जिक्र किया है। जिस प्रकार बर्फ कुछ समय के लिए जमी होती है फिर पिघल जाती है उसी प्रकार दुख कुछ समय के लिए आता फिर चला जाता है। गरीब परिवारों की दयनीय दशा, स्थितियों का वर्णन किया गया है है।

(26) अंधेरे से अधेरे तक-कहानी में पात्र मनोहर विदेश (अमेरिका) जाकर नौकरी करता है। वह अपने बहनों की शादी करने लिए वहाँ धन कमाने गया था मगर वहाँ उसके साथ सही व्यवहार नही होता। विदेश में लोग उसे अच्छी नजरों से नही देखते। लेखिका ने विदेशी संस्कृति, व्यवहार तथा रहन-सहन को कहानी के माध्यम से व्यक्त किया है। मनोहर को विदेशी लोगों से चिढ़ भी होती है, वह अपनी खीझ को कभी-कभी व्यक्त भी करता है। कुल मिलाकर यह कहानी पाश्चात्य संस्कृति के भाव बोध तथा भारतीयों के प्रति तिरस्कार को व्यक्त करती है।

(27) दोपहर में मौत- कहानी जनार्दन नामक व्यक्ति की कहानी है जो विदेश गया था वही उसकी मौत हो जाती है। उसका साथी वहाँ पता करने गया तब पता चला कि उसकी मौत हो चुकी है। अब वह दुनियां में नही है। वापस आने पर उसके पिता बताते हैं कि नेम प्लेट के अलावा उसका कुछ नही है। उसकी माँ का रो-रोकर बुरा हाल है। मृणाल जी ने एक माँ की ममता एवं करुणा को व्यक्त किया है। अपने बेटे के मर जाने के बाद उसकी माँ विलख-विलख कर रोती है।

(28) यानी कि एक बात थी- कहानी में एक स्त्री की मनोनुभूति तथा प्रेम को दिखाया गया है। वह परिवार मेंसबके प्रति सहज है, सबका सम्मान करती है। वह कहती है कि मेरे भीतर खिचे उस वीरान सन्नाटे में मेरी अपनी आवाज घुग्घुओं के स्वर जैसी किसी मनहुसियत से गूंज रही है। भारतीय समाज में ही नही विश्व में स्त्री सबके प्रति समर्पित है। वह दया, माया, ममता सभी गुणों की खान है। वह अपने समर्पण एवं दया भाव के साथ, सबके साथ सामजस्य बनाकर चलती है फिर भी आज सतायी जा रही है। स्त्री पर बात करते हुए नासिरा शर्मा कहती हैं कि- "औरत वह भी इस सदी की, कई तरह की आशाएँ जगाती है जिसमे उसका सबसे बड़ा कर्तव्य समाज के प्रति नजर आता है। क्योकि अब वह घर में बैठी जाहिल, अनपढ़, फूहड़ औरत नही रह गई है। बल्कि वह सुशिक्षित, सुदर, सुगढ़ एक ऐसी औरत है जो देश की योजनाएँ बनाने में अपना सहयोग दे रही है।"[76]

संदर्भ-ग्रंथ सूची :

1 पाण्डे मृणाल- बचुली चौकीदारिन की कढ़ी कहानी संग्रह, (बिब्बो कहानी), (1990), राधाकृष्ण प्रकाशन नयी दिल्ली, पृष्ठ संख्या 11-12

2. डा0 पाण्डे भवदेव-बंग महिला नारी मुक्ति का संघर्ष, जीवन के दस्तावेद, पृष्ट संख्या 32

3. प्रो0 सिंह लक्ष्मण विष्ट बटरोही-महादेवी वर्मा का रचना संसार, उमा भट्ट निजता की खोज, पृष्ठ संख्या 02

4. पाण्डे मृणाल-बचुली चौकीदारिन की कढ़ी (कहानी संग्रह), (पितृदाय कहानी), (1990), राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली पृष्ठ संख्या- 24

5. पाण्डे मृणाल-बचुली चौकीदारिन की कढ़ी (कहानी संग्रह), (पितृदाय कहानी), (1990), राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली पृष्ठ संख्या- 26-27

6. पाण्डे मृणाल- कुत्ते की मौत (कहानी), (1990), राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या- 31

7. सं. हाड़ा माधव-स्वयं प्रकाश की लोकप्रिय कहानियाँ, (2016), प्रथम संस्करण, प्रभात प्रकाशन नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या- 18

8. पाण्डे मृणाल-बचुली चौकीदारिन की कढ़ी (कहानी संग्रह), कुत्ते की मौत (कहानी), (1990), राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या- 36
9. पाण्डे मृणाल-बचुली चौकीदारिन की कढ़ी (कहानी संग्रह), प्रतिशोध (कहानी), (1990), राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या- 40
10. वर्मा महादेवी-श्रृंखला की कड़ियाँ, (2008), लोक भारती प्रकाशन इलाहाबाद, पृष्ठ संख्या- 34
11. भण्डारी मन्नू-ईसा के घर इन्सान (कहानी), पृष्ठ संख्या- 106
12. पाण्डे मृणाल- एक नीच ट्रैजडी (1990) राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या- 52
13. खेतान प्रभा-बाजार के बीच बाजार के खिलाफ, पृष्ठ संख्या- 169
14. प्रियंवदा ऊषा-शेषयात्रा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या- 09
15. सेवती निरूपमा-दहकन के पार, पृष्ठ संख्या- 06
16. पाण्डे मृणाल- बचुली चौकीदारिन की कढ़ी, (कहानी संग्रह), (प्रेंमचन्द्र जैंसा की मैंने की उन्हें देखा, कहानी), (1990), राधाकृष्णन प्रकाशन नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या-112
17. पाण्डे मृणाल-बचुली चौकीदारिन की कढ़ी, (1990), राधाकृष्णन प्रकाशन नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या- 117
18. डा0 यादव राजेन्द्र-उपन्यास स्वरूप और संवेदना, पृष्ठ संख्या- 170

19. पाण्डे मृणाल-बचुली चौकीदारिन की कढ़ी, (1990), राधाकृष्णन प्रकाशन नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या- 134
20. पाण्डे मृणाल-दूरियां (कहानी), (1990), राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या- 146
21. पाण्डे मृणाल-हमसफर (कहानी), (1990), राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या- 150
22. पाण्डे मृणाल-चार नम्बर की सुनहरी बागलेन, (कहानी), (1990), राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या- 158
23. पाण्डे मृणाल-चार नम्बर की सुनहरी बागलेन, (कहानी), (1990), राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या- 159
24. पाण्डे मृणाल- एक थी हंसमुख दे, (1990), राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या- 167
25. पाण्डे मृणाल- एक थी हंसमुख दे, (1990), राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या- 167-168
26. कुमार राकेश- नारीवादी विमर्श, पृष्ठ संख्या- 206
27. पाण्डे मृणाल- रिक्ति (कहानी), (1990), राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली पृष्ठ संख्या- 176
28. प्रकाश अल्का-नारी चेतना के आयाम, पृष्ठ संख्या- 88
29. पाण्डे मृणाल-लेडीज, (कहानी), (1990), राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या- 181

30. वर्मा महादेवी-श्रृंखला की कड़ियाँ, (2008), लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद, पृष्ठ संख्या- 26

31. पाण्डे मृणाल-लेडीज टेलर (कहानी), (1990), राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या- 189

32. पाण्डे मृणाल-लेडीज टेलर (कहानी), (1990), राधाकृष्णन प्रकाशन नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या- 194

33. पाण्डे मृणाल-बचुली चौकीदारिन की कढ़ी, (1990), राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या-199

34. सं. डा. भरद्वाज शैलजा-हिन्दी साहित्य में युगीन बोध, पृष्ठ संख्या - 454

35. पाण्डे मृणाल- चार दिन की जवानी तेरी, (1995), राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या (कवर पृष्ठ से)

36. पाण्डे मृणाल-लड़कियाँ (कहानी), (1995), राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली, पृष्ठसं.19

37. पाण्डे मृणाल-एक पगलाई सस्पेंस कथा, (कहानी), (1990), राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या 211

38. शर्मा क्षमा-स्त्रीवादी विमर्श: समाज और साहित्य, पृष्ठ संख्या 26

39. पाण्डे मृणाल-कर्कशा (कहानी), (1990), राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या 214

40. पाण्डे मृणाल-हिर्दा मेयो का मझला (कहानी), (1995), राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या 45
41. वर्मा महादेवी-विपासा (पत्रिका), (2008, मार्च-अप्रैल), पृष्ठ संख्या- 05
42. पाण्डे मृणाल-मुन्नू चा की अजीब कहानी (कहानी), (1995), राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या- 60
43. पाण्डे मृणाल- मुन्नू चा की अजीब कहानी (कहानी), (1995), राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या- 61
44. पाण्डे मृणाल- बीज (कहानी), (1995), राधाकृष्ण प्रकाश नई दिल्ली पृष्ठ संख्या- 75
45. पाण्डे मृणाल-सुपारी फुआ (कहानी), (1995), राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या- 78
46. पाण्डे मृणाल-सुपारी फुआ, (कहानी), (1995), राधाकृष्ण नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या- 79
47. पाण्डे मृणाल-अब्दुल्ला (कहानी), (1995), राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या-86
48. पाण्डे मृणाल-अब्दुल्ला (कहानी), (1995), राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या-87
49. पाण्डे मृणाल-चार दिन की जवानी तेरी, (1995), राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या-94

50. पाण्डे मृणाल- चार दिन की जवानी तेरी, (1995), राधाकृष्णन प्रकाशन नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या-102
51. पाण्डे मृणाल-चार दिन की जवानी तेरी, (1995), राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या- 102-103
52. पाण्डे मृणाल- यानी कि एक बात थी, (1990), राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली, पृष्ठ (पुस्तक की प्रस्तावना से)
53. पाण्डे मृणाल-कोहरा और मछलियां (कहानी), (1990) राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या- 11
54. मुदगल चित्रा-एक जमीन अपनी, पृष्ठ संख्या- 83
55. पाण्डे मृणाल- कोहरा और मछलियां, (कहानी), (1990), राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या-15
56. पाण्डे मृणाल-चिमगादड़ें (कहानी), (1990), राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या-17
57. पाण्डे मृणाल-चिमगादड़ें (कहानी), (1990), राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या-18
58. पाण्डे मृणाल-चिमगादड़ें (कहानी), (1990), राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या-23
59. पाण्डे मृणाल- ढ़लवान (कहानी), (1990), राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या-25

60. पाण्डे मृणाल-औडर (कहानी), (1990), राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या-29
61. पाण्डे मृणाल-यानी कि एक बात थी, (1990), राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या-33
62. पाण्डे मृणाल-यानी कि एक बात थी, (1990), राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या-50-51
63. प्रो0 आनन्द सुगम-भारतीय इतिहास में नारी, पृष्ठ संख्या- 126
64. पाण्डे मृणाल- यानी कि एक बात थी, (1990), राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या-58
65. पाण्डे मृणाल-प्रेतबाधा (कहानी), (1990), राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या-73
66. पाण्डे मृणाल- प्रेतबाधा (कहानी), (1990), राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या-74
67. सेतिया सुभाष- स्त्री अस्मिता के प्रश्न, पृष्ठ संख्या-15-16
68. हंस पत्रिका, अप्रैल (2010), पृष्ठ संख्या-74
69. पाण्डे मृणाल-कगार पर (कहानी), (1990), राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या-95
70. पाण्डे मृणाल-दरम्यान (कहानी), (1990), राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या-111

71. पाण्डे मृणाल-कैंसर (कहानी), (1990), राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या-120

72. पाण्डे मृणाल-कैंसर (कहानी), (1990), राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या-121

73. पाण्डे मृणाल-दुर्घटना (कहानी), (1990), राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या-132

74. पाण्डे मृणाल-यानी कि एक बात थी, (1990), राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या-159

75. पाण्डे मृणाल- यानी कि एक बात थी, (1990), राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या-210

76. शर्मा नासिरा-औरत के लिए औरत, पृष्ठ संख्या-159